Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 19 अंक 07 30 जूलाई, 2019 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

शांति के दूत, राष्ट्र में अशांति

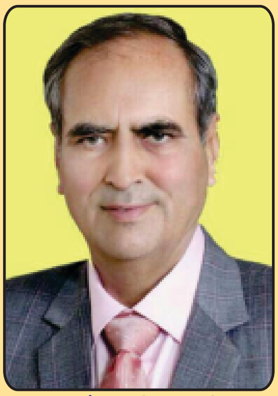

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

हमारा प्यारा भारत देश निसंदेह ऐसियाई देशों की श्रंखला में विकास के प्रगति पथ पर है। यह भी वास्तविकता है कि कूनन व्यवस्था एवं देश में सदभावना व शांतिपूर्ण वातावरण ही विकास की कुंजी है लेकिन आज तथ्य दर्शाते हैं कि देश की कानून व्यवस्था चरमरा गई है व पूरे राष्ट्र में दिन प्रतिदिन आंतरिक सुरक्षा का वातावरण खराब होता जा रहा है। पिछले गत वर्षों के प्रैस में दिए गए आंकड़ें दर्शाते हैं कि सशस्त्र सेनाओं के 4600 जवान उग्रवादी, तालिबानी, नक्सलवादी हमलों में अपने प्राणों की आहूति दे चुके हैं और 13500 निर्दोष नागरिक तथा 15937 उग्रवादी भी अपनी जान गंवा चुके हैं।

वर्ष 2016 में 322 सैनिक और 82 सुरक्षा कर्मी शहीद हुए। वर्ष 2017 में 342, वर्ष 2018 में 705 तथा 2019 में 347 तथा केवल पुलवामा हमले में 40 सुरक्षा कर्मी शहादती जामा पहन वतन को ग णी कर गए। हमारे जांबाज सैनिकों ने बालाकोट में हवाई हमला कर आतंकी ठिकाने को नेस्तनाबूत कर बदला लिया जिसमें बहुगणना में आंतकी ढेर हुए। सरकार ने कई बार सौहार्द का हाथ पाकिस्तान की ओर बढ़ाया है लेकिन वहां के हुक्मरान सैनिकों ने सदा उल्टा उत्तर ही दिया। पाकिस्तान में छुपे बैठे आतंकी आका मसूद अजहर ने हरकत उल्ल मुजाहद्दीन दहशतगर्त संगठन से वित्तीय सहायता पाकर सोमालिया का दौरा यमन में 2000 में तालिबानों की मदद से जैश ए मोहम्मद संगठन खड़ा किया जिसकी पुष्टि संयुक्त राष्ट्र ने प्रतिबंध से की लेकिन 2001 में इसी संगठन ने भारतीय संसद पर हमला किया और आज तक पाकिस्तान ने उस पर कोई कार्यवाही नहीं की लेकिन श्री कुलभूषण जाधव की अवैध सजा पर पर्दा डालने हेतू केवल गत सप्ताह उसे गिरफ्तार किया गया है।

भारत सरकार द्वारा बगों से बलात्कार के मामलों मं फंसी की सजा दिए जाने का प्रावधान किए जाने के बाद हाल ही में समाचार पत्रों के अनुसार उत्तर प्रदेश के कनौज में एक पुरूष ने 11 वर्षीय अपनी भतीजी के साथ बलात्कार किया। मुरादाबाद और मुजफ्फ्रनगर में तीन बगों के साथ यौन शोषण हुआ। रामपुर में 7 साल की बच्ची के साथ बलात्कार किया। मध्य प्रदेश के महानगर इंदौर में 20 अप्रैल 2018 को फुटपाथ पर सो रही चार महीन की बगी को चुपचाप उठा लिया गया। उस मासूम के साथ बलात्कार किया गया और उसका सिर पटक-पटक कर उसकी हत्या कर दी गई। उस बच्ची का परिवार राजबाड़ा में गुब्बारे बेचकर जीवनयापन करता है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार भारतवर्ष में 2001 से 2016 के बीच बगों के प्रति होने वाले अपराधों में 889 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इन 16 सालों में बगों के प्रति अपराध 10814 से बढ़कर 106958 हो गए।

भारत की राजधानी दिल्ली में ही ये अपराध वर्ष 2001 में 912 से बढ़कर वर्ष 2016 में 8178 हो गए। कर्नाटक में ऐसे दर्ज अपराधों की संख्या 72 से बढ़कर 4455 (6088 प्रतिशत), ओडिशा में 68 से बढ़कर 3286 (4582 प्रतिशत), महाराष्ट्र में 1621 से बढ़कर 14559, उत्तरप्रदेश में 3709 से बढ़कर 16079 (334 प्रतिशत) और मध्य प्रदेश में 1425 से बढ़कर 13746 (865 प्रतिशत) हो गई। इन 16 सालों में भारत में बगों के प्रति अपराध के कुल 595089 मामले दर्ज हुए। वर्ष 2001 से 2016 के बीच से 16 वर्षो में भारत में बगों के बलात्कार और यौन अपराध के केल 153701 मामले दर्ज किएगए जहां बगों से बलात्कार और गंभीर यौन उत्पीड़न (पाक्सो के तहत) सबसे ज्यादा मामले दर्ज हुए हैं। हाल ही में केंद्रीय केबिनैट ने बगों के खिलाफ अपराध से निपटने वाले पाक्सो कानून में संशोधनों को मंजूरी दी और बगों के खिलाफ यौन अपराध करने वालों को मृत्युदंड देने का प्रावधान शामिल किया है। इन संशोधनों से बाल यौन उत्पीड़न पर अंकुश लगने की उम्मीद है क्योंकि कानून में शामिल किए गए मजबूत दंडात्मक प्रावधान निवारक का काम करेगें। मृत्युदंड की सजा के अलावा चाइल्ड पोर्नोग्राफी जैसे अपराधों के लिए जुर्माना और जेल की सजा का प्रावधान किया गया है। सरकार का मानना है कि सजा ही बगों के प्रति होने वाले अपराध में कमी जा पाएगी। इसी कड़ी में पाक्सो एक्ट की विभिन्न धाराओं में भी संशोधन किया गया है। जिससे इस तरह के अपराधों पर तत्काली और मृत्युदंड जैसी कड़ी

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

सजा दी जाएगी। इसमें प्राकृतिक आपदा के दौरान बगों के साथ यौन अपराध जैसे मामले आते हैं। भारत के चीफ जस्टिस रंजन गोगोई, जस्टिस दीपक गुप्ता और अनिरूद्ध बोस की पीठ ने कहा कि इस साल एक जनवरी से 30 जून के बीचदेशभर में बगों के बलात्कार के मामले में 24212 एफआईआर दर्ज हुई है।

सर्वोच्च न्यायालय ने वस्तु स्थिति का संज्ञान लिया और जनवरी से 30 जून तक बगीयों से बलात्कार के 24212 मामले दर्ज हुए, जिनमें से 11981 मामलों में जांच चल रही है। पुलिस अभी तक 12231 मामलों में चार्जसीट दाखिल कर पाई है। ट्रायल में अभी तक मात्र 900 मामलों में पूर्ण हुआ है और फैसला आया है। धिमी न्यायिक प्रणाली पर न्यायालय ने चिंता जताई है। लेकिन न्यायालयो में अधर में ही लटके हैं। अब न्यायालय के संज्ञान से शायद कुछ राहत मिले । आज भी सर्वोपरि है कि जनता की सोच बदले। कन्या किसी का कुछ लेती नहीं और लड़का किसी को कुछ देता नहीं। अगर लड़की शादी हो कर चली जाती है तो लड़का अपनी नौकरी या व्यवसाय में घर से निकल जाता है।

आज हर जगह कानून अव्यवस्था का माहौल देखा जा सकता है। कहीं पत्थरबाजी हो रही है, कहीं गोलीबारी तो कहीं गुरीला हमले, जिसका खामियाजा रणबांकुरे अपने प्राणों की आहूति देकर उठा रहे हैं। आतंकियों और पत्थरबाजों के लिए मानवाधिकार और राजनैतिक दल जनता को गुमराह कर लाभबद्ध कर देते हैं जिससे रणबांकुरों को सीमा के साथ-साथ राष्ट्र के आंतरिक मामलों में भी उलझना पड़ता हैं। राष्ट्रीय एकता अखंडता और भाईचारे को तो नुकसान होता ही है। राष्ट्रीय संसाधनों को भी नुकसान पहुंचाया जाता है।

कहीं नक्सली हमले हो रहे हैं क्योंकि अधिकतर राज्यों में नक्सलवाद फैल चुका है। रोहिंज्या और बांगलादेशियों को पनाह दी जा रही है। यहां भी विडंबना है कि वे अपने देश से गैर कानूनी कार्यवाही के कारण निकाले गए हैं और भारत के ना केवल सीमांत राज्यों बल्कि जम्मू काश्मीर तक उन्हे बसाया जा रहा है। उनके लिए राशन कार्ड, आधार कार्ड, नौकरियां तथा मकान तक की व्यवस्था की जा रही है। अपने नागरिकों की अनदेखी की जा रही है। ऐसे नागरिक अपने हकों से वंचित होकर हिसंक मार्ग पर उतरते हैं तो सबको पीड़ा होती है। भारत सरकार ने कुछे प्री-फैब्रीकेटिड मकान बर्मा को दिए भी हैं ताकि वे अपने विस्थपित नागरिकों को बसा सकें। जम्मू काश्मीर के निकाले गए लोगों को पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है ।

आज राष्ट्र में सस्ती और नकली शराब से लोग मर रहे हैं तथा चिट्टा एक नया जहर नशा है जिसका प्रसार कुछ वर्षो में अत्याधिक हुआ है। हरियाणा में भी युवा तेजी से नशे के चपेट में आ रहे हैं। इसका उदाहरण पिछले साल हुई भर्ती में देखने में मिला था जहां कई युवा नशे में लिप्त पाए गए थे। हरियाणा सरकार द्वारा पी जी आई एम एस रोहतक में चलाए जा रहे नशामुक्ति केंद्र के आंकड़ों के मुताबिक हरियाणा में पिछले 6 वर्षो में नशीले पदार्थो का सेवन करने वाले युवाओं की संख्या में चार गुना बढौतरी हुई है। समय रहते इनके लिए कदम नहीं उठाए गए तो हरियाणा का भविष्य एक तरह से अंधकार में जाना तकरीबन तय है। वर्ष 2016 में फिल्म 'उड़ता पंजाब' में पंजाब की ड्रग समस्या को दिखाया गया था लेकिन पड़ोसी राज्य हरियाणा की तस्वीर चिंताजनक हाते हुए भी इस पर बहुत कम चर्चा होती है। राज्य में 35 वर्ष की आयु के 20 लोगों को रोजाना ड्रग की लत छड़ाने के लिए नशामुक्ति केंद्र में भर्ती किया जाता है। हर रोज नशे से मरने वालों की संख्या पंजाब में 186 और हरियाणा में 76 आंकी गई है। राज्य में जनवरी से लेकर मई 2019 तक केवल 5 महिनों में ड्रग के 918 मामले दर्ज हुए जिनमें 1129 अपराधियों को गिरफ्तार किया गया है।

एन डी पी एस एक्ट के तहत जेल में बंद कुल बंदियों में 15 प्रतिशत बंदी ऐसे हैं जो जेल में बंद होने से पहले नशा खरीदते-बेचते रहे हैं या खुद भी नशा करते रहे हैं। हालांकि इस एक्ट के तहत आरोपी के दोष साबित होने पर 10 साल की सजा का प्रावधान है लेकिन फिर भी युवा पीढ़ी नशे की लत में जकड़ती जा रही है। हरियाणा के जो गांव पंजाब सीमा के साथ सटे हैं वहां पर नशे का कारोबार ज्यादा है। एक रिपोर्ट के अनुसार सड़कों पर रहने वाले बगो खतरनाक से खतरनाक नशे का सेवन करते हैं। केवल राजधानी दिल्ली में 20 हजार ऐसे बगो हैं जो कि तंबाकूखाते हैं। इसके साथ ही नशे के शिकार बगों ने शराब पीने वाले 9450 भांग-गांजा पीने वाले 5600, हिरोईन का सेवन करने वाले 840 और अन्य प्रकार के नशे का सेवन करने वाले 7910 शामिल हैं। दिल्ली से सटे एन सी आर में 15 साल की उम्र पार करते ही किशोरों को नशे के आदि बनाने के लिए कारोबारी सक्रिय हो जाते हैं। यहां तक कि पुलिस कर्मचारी भी नशाखोरी से अछुते नहीं हैं। हरियाणा में पुलिस कर्मचारियों की संख्या 45 हजार से उपर है। इसके इलावा 4 से 5 हजार महिला पुलिस कर्मचारी भी हैं। एक अनुमान के मुताबिक 30 से 40 प्रतिशत पुलिस कर्मी शराब का सेवन

जुआ सुख, संपत्ति और समय इन तीनों का, जो जीवन के लिए अति मूल्यवान है, नाश करता है। –अज्ञात

कर रहे हैं। यह गंभीर चिन्ता का विषय है।

इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि भारतवर्ष में कानून व्यवस्था चरमराई हुई है। एक आर टी आई के अनुसार अकेले जम्मू काश्मीर में अलगाववादियों की सुरक्षा पर वार्षिक 10 करोड़ रूपयों का खर्च होता है, जो ऐश करते हैं भारतीय संसाधनों पर और गुणगान पाकिस्तान का करते हैं। भारतीय सुरक्षा कर्मियों से सुरक्षा लेते हैं और उन्ही पर छींटाकशी करते हैं। यहीं नहीं उन्ही पर ही पत्थरबाजी करवाते हैं। आतंकी, अलगाववादी और नक्सली जिन कानूनों की धगियां उड़ाते हैं, पकड़े जाने पर उन्ही का सहारा लेकर छू भी जाते हैं और उल्टा उन्ही शूरवीर राष्ट्र प्रेमियों की सुरक्षा की गुहार लगाते हैं। सबसे बड़ी विडंबना यह भी है कि लोगों के बगों को गुमराह कर पत्थरबाजी करवाने वालों के बगो विदेशों में अच्छी से अच्छी शिक्षा ग्रहण करते हैं। वास्तविकता यही है कि स्वार्थी और मौका प्रस्त राजनेतओं की वोट की राजनीति आंतरिक सुरक्षा में मुख्य बाधा हैं। वर्ष 1994 में सुरक्षा बलों के खिलाफ 977 शिकायतें दर्ज करवाई गई जिनमकें से 965 की जांच हुई और 940 आरोप गलत साबित हुए। अतः शिकायतें ही झूठी थी। राजनैतिक आकाओं का अलगाववादियों और नक्सलवादियों का खुला प्रश्रय है यानि बाड़ ही जिस खेत को खा रही है, उस खेत का आलम क्या होगा?

राष्ट्र में निरंतर बढ़ रही बेरोजगारी और युवा वर्ग को असुरक्षा एवं भविष्य का अंधकारमयी होना ही इस कुमार्ग पर लने को बाध्य करता है और मौकाप्रस्त राजनेता अपनी रोटियां सेकता है। छत्तीसगढ़ का सुकमा संगठन और हमला एक पुराने राजनैतिक दल का खुला समर्थन इसका उदाहरण है। हाल ही के उत्तरी भारत के मुख्यमंत्रियों की बैठक दिनांक 25-07-2019 को हुई लेकिन देखना है नशा मुक्ति के लिये कितनी लाभदायक सिद्ध होती हैं।

आज अपराध और अपराध जगत दोनों पुलिस की भी आसान कमाई का साधन हैं क्योंकि अपराध की जड़ें इतनी फैल चुकी है कि किसी भी सफेदपोश पर छींटें है, जिसके निदान हेतू पुलिस अकेले कुछ कर नहीं सकती। समाज के हर तबके को आगे आना होगा तभी कोई रोशनी की किरण दिखाई दे सकती है अन्यथा अंधेर नगरी, चौपट राजा की कथा कोई भुला नहीं सकता फ्रि भी इसका हिस्सा बने और अपनी बदकिस्मती पर रोयें। समाधान तो दूर की कौड़ी है। कोई लोहपुरूष ही इसका समाधान कर सकता है। तथ्य कोई झुठला नहीं सकता। मात्र वर्ष 2019 जुलाई तक के क्राईम रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़े प्रत्यक्ष को प्रमाण नहीं, की कहानी पुकार रहे हैं जिनमें हत्या 440 यानि 36 प्रतिशत बढ़ौतरी, हत्या का प्रयास 345 यानि 18 प्रतिशत बढ़ौतरी, बलात्कार 611 यानि 18 प्रतिशत बढ़ौतरी, सामुहिक बलात्कार 63 यानि 40 प्रतिशत बढ़ौतरी, अपहरण और उठाईगिरी 1368 यानि 42 प्रतिशत बढ़ौतरी, डाके 68 यानि 12 प्रतिशत बढ़ौतरी, लूट और राहजनी 331 यानि 22 प्रतिशत बढ़ौतरी। इसके अलावा औरतों पिछड़े जातियों तथा बगों के विरूद्ध अपराधों में बेशुमार वृद्धि हुई है। ऐसी दशा रदातोरात तो नहीं हुई क्योंकि कमोवेश अपराध आदिकाल से मानव के साथ रहा है। कीाी जिसकी लाठी उसकी भैंस भी रही, कभी आदि मानव बाहूबल पर कबीले का सरदार रहा लेकिन आधुनिक युग में अपराधें का बढना चिंता का विषय है जिसके लिए अकेला कोई भी जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता अलबता राजनीति में अपराध की पृष्ठभूमि से करीब सभी दलों में है। कुछेक गलत राजनैतिक निर्णयों से देश में अस्थिरता का माहौल बना जो समय रहते सुधारा नहीं गया और पड़ोसी देश की काग दृष्टि शुरू से ही कश्मीर मुद्दे पर थी। तब के हुकमरानों ने अपनी भूल सुधार हेतू कोई कदम नहीं उठाया और घाटी जल उठी। ना जाने समाधान कब और कौन निकालेगा। पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति जनरल परवेज मुशरफ ने अलगाववादियों को सहायता देने की मान भी ली थी कि उनका देश उन्हे धन तथा ट्रैनिंग दोनों उपलब्ध करवाता है। वर्ष 1989 से 2009 तकअंदाजन 47000 लोगों की जान गई जिनमें 7000 पुलिसकर्मी भी हैं। यह छदम युद्ध आज भी जारी है। पुलवामा में आतंकवादियों द्वारा घात लगाकर 40 पुलिस कर्मी मारे गए जिसका बदला बालाकोट में हमारे सैनिकों ने हवाई सट्राइक कर ट्रैनिंग कैंप नेस्तनाबूत कर दिया। अपुष्ट 3000 के करीब अपराधी मारे गए। वर्ष 1974 से 2017 तक भारत में 12002 आतंकी हमले हुए जिनमें 19866 हताहत तथा 30544 जख्मी हुए।

अपराध पर काबू पाने का सबसे बड़ा उपाय रोजी रोटी की व्यवस्था है जितनी जल्दी अधिकतम रोजगार सृजन हो सकता है, करें जिससे अपराध पर स्वतः अंकुश लगेगा। अगर समाज, राजनेता और सुरक्षा सैनिक मिलकर प्रयास करें तो भारत पुनः विश्व पर शांति की पताका फहरा देगा।

डॉ0 महेंद्र सिंह मलिक

आई.पी.एस. (सेवा निवृत)

पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,

प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति एवं

जाट सभा, चंडीगढ व पंचकुला

मेहनत की फसल आप ही काटेंगे, सदैव ऐसा नहीं होता। हम आम खाते हैं पर पेड़ हमने नहीं लगाए थे। –लोकमान्य तिलक

BHAKRA DAM: TEMPLE OF MODERN INDIA WAS FOUNDED BY CH. SIR CHHOTU RAM

-Dr. R.K. Rana, Rohtak

The idea of the construction of 'Bhakra Dam' was first conceived in 1908 by Sir Louis Dane, the Lt. Governor of the Punjab (Pre-Partition). He was on a visit to the princely state, Bilaspur, presently in Himachal Pradesh. While coming down the Satluj river in a boat his quick eyes noticed the narrow gorge with high structures on both sides and deep water. He at once felt that it was an ideal place for building a dam for water storage and generation of power.

Lt. Governor sent his views in this regard to the Punjab irrigation Deptt. Accordingly Executive Engineer H.W. Nicholson, prepared a plan envisaging the construction of a dam at Bhakra across the Satluj 390 feet high to extend irrigation to famine prone areas of South East Punjab especially of Hisar, Rohtak, Gurgaon and the then adjoining states of Patiala, Jind, Faridkot and Bikaner.

In 1919, estimates were completed. The total project cost was estimated at Rs. 14,44,74,926. The proposed height of the dam was to be 390 feet with areas to be irrigated about 25 lakhs of acres. It was Ch. Chhotu Ram, the leader of the Unionist Party from Rohtak District, who heard of some such plan when he entered the Punjab Council in 1923. He took keen interest in its broad objectives. After having studied its basic implications and being convinced of its extremely beneficial results for a vast part of Haryana region, he started raising questions on the floor of the house. In 1924 he moved a resolution in the council to impress upon the government to take up this project without any further delay. In the same year, after assuming the charge of Minister of Agriculture, Ch. Chhotu Ram asked for the files relating to the Bhakra Dam and himself went to inspect the proposed site. After that, he repeatedly insisted the government to give a practical shape to this important project. On the persuasion of Ch. Chhotu Ram's the agriculturists of Haryana region presented memorandums to the ministers during 1925-27urging them to start this project. As a result of his efforts the Punjab government sent two senior engineers, A.N. Khosla and Kanwarsain to U.S.A. to discuss the design and details of the dam with the engineers of the Bureau of Reclamation. Consequently, on the request of Punjab Govt. an American Dam

चौ० सर छोटूराम चीफ इंजीनियर के साथ भाखड़ा–बाध स्थल का निरीक्षण करते हुये।

HH Raja Anand Chand welcoming Ch. Chhotu Ram, Revenue Minister Punjab for agreement on Bhakra Dam

Expert Mr. Wiley came here and studied the details. He advised the Govt. of Punjab to make a dam of 500 feet height instead of 390 feet.

Inspite of the approval of engineers the work on the dam could not be undertaken because of the objections raised and hindrances placed by the governments of Bombay, Sindh, Punjab and ruler of Bilaspur. But despite the objections, hindrances and delaying tactics on one or the other pretexts by the concerned governments,Ch. Chhotu Ram was committed for the cause of farmers and was successful in appointing a committee of two Superintending Engineers and later a Commission was formed to settle the dispute between the governments of Sind and Punjab. The Commission recommended the payment of Rs. 6 crores to Sind and he got this amount paid to the Sind government during 1944 as compensation.

On Ch. Chhotu Ram's pursuasion, the ruler of Bilaspur H.H. Raja Anand Chand agreed to allow the raising of the Dam on its original site and an agreement was made in November 1944. Thus, the matter came to a close with the signing ofthe document between Raja Anand Chand and Ch. Chhotu Ram, Revenue Minister of Punjab. This mission could be successful only due to the vision, strong will and untiring efforts of Ch. Chhotu Ram.

Ch. Chhotu Ram, signed the approval of Bhakra Dam Project on 08.01.1945, only a day before his death. He also approved the training of a talented Engineer in USA to construct this dam. He wanted an early execution of the Bhakra Dam Project. But alas! Ch. Chhotu Ram did not live to see his dream materializing into reality. Preliminary works commenced during 1946. In October 1963, in a simple but impressive ceremony by Pt. Jawahar Lal Nehru, the then Prime Minister of India, said that this Dam has been built by dedication and unrelenting efforts of Ch. Chhotu Ram for the benefit of mankind and therefore, he is worthy of worship.

जिसने अध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उस पर काम और लोभ का विष नहीं चढ़ता। –रामकृष्ण परमहंस

The first Prime Minister of India Jawaharlal Nehru inaugurating the Bhakra Dam Project on 17th Nov. 1955 accompanied by the Irrigation Minister Ch. Ranbir Singh Hooda (with turban) and other dignitaries.

Bhakra dam is concrete gravity dam on the Satluj River, which forms the Gobind Sagar reservoir. It is 226 m in height with 9.1m width and length of 518.25m. It is a multipurpose dam for irrigation as well as for generation of Hydroelectricity. It provides irrigation to 10 million acres of fields of Punjab, Haryana and Rajasthan as well as electricity to Himachal and the neighbouring states including Delhi. During its construction period from 1950 to 1960, Bhakra Dam was almost a place of pilgrimage for the Indians. It was the symbol and hope of a New India. A galaxy of illustrious leaders, monarchs and luminaries from the film industry came to Bhakra Dam. Col. Nasser, President of Egypt, Prince Philip (Duke of Edinburgh), Dalai Lama, Actor and producer Raj Kapoor, Actor Dilip Kumar and Actress Meena Kumari graced the project with their visits.

About twenty years ago we, the scientists of Haryana Agricultural University, Hisar along with our families had the opportunity to visit this great dam. It is really a marvelous structure created by man involving the beauty of nature. We were very much impressed to see the fulfill of a dream of strongman, the Messiaha of peasantry, Ch. Chhotu Ram. But we could not find any photo or statue of him over there. A big photo consisting of a galaxy of persons with the first Prime Minister Jawahar Lal Nehru was there on the wall. I could recognize a Kisan Leader and Minister for Agriculture, Ch. Ranbir Singh Hooda, who represented the peasantry as well as their tallest leader Ch. Chhotu Ram for fulfilling his dream. The Govt. of India and Bhakra Management Board should erect a statue of Ch. Chhotu Ram on the Dam side to pay homage to the revered leader. He belongs to all humanity, who has put the Nation on the path of progress, path of green revolution, path of self sufficiency to remove hunger of million people and path of modern technology. He lives in heart of the masses as a source of inspiration for humanity.

My grandparents as well as parents living in village Pakasma, which is very near to Tehsil Sampla and Chhotu Ram's Village Garhi Sampla (Distt. Rohtak), have always been praising the works done by Ch. Chhotu Ram for the upliftment of farmers and poor masses living in the villages. He is remembered by the peasantry as thefirst agrarian reformer and is regarded with much love and respect, for making the peasantry debt free and owner of their own lands. I occasionally travel between Hisar and Delhi. I always salute the statue of Ch. Sir Chhotu Ram erected at Sampla bypass and honouredwith garlands on the occasion of the birth anniversary of this prophet of the farmers and masses, called Deenbandhu and Bhagirath of Bhakra waters to enrich the motherland. I get inspiration and strength to follow his ideals to work for humanity.

In the memory of great leader Ch. Chhotu Ram, a new 64 ft. high tall and attractive statue was unveiled by the Prime Minister Narender Modi ji on October 9, 2018 at Sampla by pass (replacing a similar statute originally unveiled by Haryana Chief Minister Ch. Om Prakash Chautala (on 22nd October, 2004) due to socio political reasons. Prime Minister Modi praised the works done by Ch. Sir Chhotu Ram for farmers and poor people. He further told the huge gathering that former Home Minister Sardar Patel had said that if the iron man Ch. Sir Chhotu Ram would have been living during 1947, there would have been no riots in Punjab at the time of partition of India as he was the leader of all the communities which respected him like a Messiaha. Prime Minister Narender Modi said in a public gathering later on at Rohtak on May 10, 2019 that Ch. Chhtou Ram deserves all the credit for founding the Bhakra Dam Project, which is now a lifeline for water and electricity for Punjab, Haryana, Himachal Pradesh, Chandigarh, Delhi and Rajasthan.

May his memory live long in the hearts of the masses giving inspiration to the generations for upliftment of Humanity and Nation as a whole, by following the ideals of this Great Man.

अगस्त का महीना और अंग्रेज डीसी के कत्ल की दिचलस्प कहानी

हरियाणा के लोगों ने 1857 की क्रांति में बहुत बढ–चढकर भाग लिया था। देश को अंग्रेजी हुकूमत के बोझिल जुए से मुक्त करने के लिए यहां की वीर जनता ने हजारों की संख्या में हंसते–हंसते अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। यह स्वाभाविक ही था कि क्रांति की समाप्ति पर अंग्रेज यहां के लोगों से बदला लें। उन्होंने गांव के गांव जला डाले, हजारों लोग मार दिए, युवक, बच्चे, बुजुर्ग और महिलाएं जो कोई भी मिला उसी पर जुल्म किया। इस दमन चक्र का प्रयोजन यह था कि लोगों में इतना भय पैदा कर दें कि फिर अंग्रेज पर हाथ उठाने का साहस न कर सके, उन्हें इसमें सफलता भी मिली। कोई 20 साल तक अंग्रेजों पर यहां कोई हाथ नहीं उठा लेकिन 6 अगस्त 1877 की रात के समय अंधेरे में एक ऐसी बिजली कौंधी जिसने अंग्रेजों में खौफ फिर से भर दिया। सुबह लोगों को पता चला कि रोहतक के नामी गिरामी डिप्टी कमश्निर एफ ई मूर का रात को किसी ने उनके घर में ही सिर धड से अलग कर दिया। 1857 के बाद पहली बार किसी अंग्रेज के खून से रोहतक की धरती लाल हुई थी। बहुत बडी घटना थी, अंग्रेज तो ऐसे घबराए कि रात को नींद आनी ही बंद हो गई। चारों तक भय का माहौल बन गया।

दुनिया बहुत कष्ट सहती है। बुरे लोगों की हिंसा के कारण नहीं, बल्कि अच्छे लोगों के मौन के कारण। –नैपोलियन

रोहतक से थोडी दूरी पर एक गांव है सुनारिया। वहां का एक बेहद साधारण और गरीब किसान जाट कौम में पैदा हुआ अमर सिंह रहता था। उसी ने रात को डीसी का काम तमाम किया था। दरअसल मूर एक अत्यंत क्रूर स्वभाव का जिद्दी अफसर था। वह किसी की बात नहीं सुनता था। किसानों को तो वो बल्किुल भी पसंद नहीं करता था और वो अक्सर उनके खिलाफ फैसले सुनाने के लिए लालायित रहता था। अमर सिंह का भी एक जमीन का केस लंबित था और अमरसिंह अपने जायज हक के लिए लडाई लड रहा था। उससे उम्मीद थी कि उसे इंसाफ मिलेगा पर मूर ने फैसला उसके खिलाफ देने की जैसे ठान ही रखी थी। अमरसिंह इस फैसले से टूट गया लेकिन उसने फैसला कर लिया कि वह जालिम मूर को छोडेगा नहीं।

6 अगस्त की रात के समय वह अपने गांव से चला। हाथ में गंडासा था। एक पतली सी चादर उसने ओढ रखी थी। सबसे पहले उसने डीसी के घर की दीवार लांघी। मूर को बाहर ही सोने का शौक था और वह चबूतरे पर आराम से चौन की नींद ले रहा था। लगभग कोई चार बजे होंगे जब अमरसिंह ने गंडासे का पहला वार किया। इसके बाद एक के बाद कुल दो प्रहार और किए और मूर की गर्दन धड से अलग कर दी। बंगले में शोर मच गया। लोग व सुरक्षा कर्मी आ गए लेकिन अमर सिंह वहां से भागा नहीं। चेहरे पर संतोष के भाव लिए अमर सिंह ने गंडासा एक तरफ रख दिया था और अपने को गिरफ्तार करने को कहा। अन्याय और बेइज्जती का बदला लेकर वह किसान गर्व के भाव चेहरे पर लिए हुए था।

हिसार के सेंशन जज ने मुकदमा चला। जालिम अंग्रेजों के फैसले कैसे होते थे इसका अंदाजा आप आसानी से लगा सकते हैं कि दो ही दिन में फैसला भी सुना दिया गया। 17 अगस्त को फैसला उच्च न्यायालय के सम्मुख पहुंचा और उस पर तुरंत मोहर लग गई। जज ने अमरसिंह को पागल करार दे दिया था और फैसला भी सुना दिया था अमर सिंह कत्ल का दोषी है। कातिल है और उसे उचित ढंग से मौत दी जाए। अगर अमर सिंह पागल था तो फिर सजा कैसी? और सजा भी अजीब, मौत दी जाए लेकिन उचित ढंग से दी जाए। अमर सिंह को किस तरह मौत दी गई किसी को पता नहीं चला पर पूरे रोहतक में चर्चाएं थी कि उसे बोटी बोटी काट कर मारा गया। अमर सिंह का केस एक तो ब्रिटिश न्याय प्रणाली की पोल खोलता है वहीं उनके सभ्य होने की भी। आज भी रोहतक की कोर्ट के पास मूर की आत्मा देखी जा सकती है।

स्वतंत्रता दिवस विशेषः अगस्त क्रांति जो फिर आजादी के बाद ही रूकी

15 अगस्त 1947 को भारत अंग्रेजों की दास्ता से मुक्त हुआ लेकिन इसके लिए देश के लाखों लोगों को अपनी कुर्बानियां देनी पडी। अनेक आंदोलन भारत के लोगों ने किए और इनमें भाग लेते हुए लाखों लोग हंसते हंसते भारत की आजादी के लिए कुर्बान हो गई। इस महीने हम भारत की आजादी का पर्व मनाएंगे और ऐसे में अगस्त क्रांति को भी याद करना जरूरी है। दरसअल अगस्त क्रांति भारत से ब्रितानी हुकूमत को उखाड़ फेंकने की अंतिम और निणार्यक लड़ाई थी, जिसकी कमान कांग्रेस के नौजवान नेताओं के हाथ में आ गई थी। राष्ट्रपति महात्मा गांधी ने 'करो या मरो' के नारे के साथ अंग्रेजों को देश छोड़ने पर मजबूर करने के लिए देश की जनता का आह्वान किया था। इसलिए इसे 'भारत छोड़ो' आंदोलन के रूप में याद किया जाता है।

देश की जनता उस समय द्वितीय विश्वयुद्ध में भारत को झोंक दिए जाने से ब्रितानी सरकार से नाराज थी। युद्ध के कारण जरूरियात की चीजों की कीमतें आसमान छूने लगी थीं। खाने–पीने की वस्तुओं से लेकर सभी मूलभूत चीजों का टोटा पड़ गया था। हालांकि कांग्रेस के नेता पहले से ही यह जानते थे कि आंदोलन को दबाने के लिए सरकार कोई भी दमनात्मक कार्रवाई करने से बाज नहीं आएगी, क्योंकि द्वितीय वश्वियुद्ध चल रहा था और अंग्रेजों ने उस समय संभावित किसी भी प्रकार के विरोध को दबाने की पूरी तैयारी कर ली थी।

इतिहासकार विपिनचंद्र ने अपनी पुस्तक 'भारत का स्वतंत्रता संघर्ष' में लिखा है कि युद्ध की आड़ लेकर सरकार ने अपने को सख्त से सख्त कानूनों से लैस कर लिया था और शांतिपूर्ण राजनीतिक गतिविधियों को को भी प्रतिबंधित कर दिया था। देश की जनता की मर्जी के खिलाफ भारत को विश्वयुद्ध में झोंक दिए जाने से लोगों में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ भारी असंतोष था। महात्मा गांधी इस असंतोष से भलीभांति परिचित थे, इसलिए उन्होंने जनांदोलन खड़ा करने का फैसला लिया।

विपिन चंद्र ने अपनी पुस्तक में एक जगह लिखा है कि कांग्रेस में इस मसले पर मतभेद होने पर महात्मा गांधी ने कांग्रेस को चुनौती देते हुए कहा– हमने देश की बालू से हाल में ही कांग्रेस से भी बड़ा आंदोलन खड़ा कर दूंगा। हमने आखिरकार 14 जुलाई, 1942 को वर्धा में कांग्रेस कार्य समिति की बैठक में आंदोलन शुरू करने का फैसला लिया गया। इसके बाद 8 अगस्त को कांग्रेस के मुंबई अधिवेशन में भारत छोड़ो आंदोलन छेड़ने का प्रस्ताव पास हुआ। महात्मा गांधी ने अपने भाषण में कांग्रस को इसके लिए धन्यवाद दिया। उन्हें भी अंग्रेजों की

जो मनुष्य के साथ दयालुता का बर्ताव नहीं करता, किंतु पूजा का दिखावा करता है, वह ढ़ोगी कहा जा सकता है। –अज्ञात

दमनात्मक कार्रवाई की आशंका थी। इसलिए उन्होंने अपने भाषण में 'करो या मरो' का आह्वान करते हुए जनता पर खुद निर्णय करने और अपना नेतृत्व करने की जिम्मेदारी सौंप दी।

तय कार्यक्रम के अनुसार, नौ अगस्त को अगस्त क्रांति का ऐलान किया गया। लेकिन इससे पहले ही ब्रितानी हुकूमत ने कांग्रेस के सारे प्रमुख नेताओं को हवालात में बंद करना शुरू कर दिया। महात्मा गांधी को 9 अगस्त को तड़के गिरफ्तार कर आगा खां महल स्थित कैदखाने में बंद कर दिया गया। लेकिन इससे आंदोलन दबने के बजाय और उग्र हो गया और देशभर में ब्रितानी सरकार के खिलाफ जनाक्रोश उमड़ पड़ा। कांग्रेस की दूसरी पंक्ति के नेताओं और महिलाओं ने आंदोलन की कमान संभाल ली। विपिन चंद्र ने लिखा है कि आंदोलन की बागडोर अच्युत पटवर्धन, अरुणा आसफ अली, राममनोहर लोहिया, सुचेता कपलानी, बीजू पटनायक, छोटूभाई पुराणिक, आर.पी. गोयनका और बाद में जेल से भागकर जयप्रकाश नारायण जैसे नेताओं ने संभाले रखी।

सरकारी आकलनों के अनुसार, एक सप्ताह के भीतर 250 रेलवे स्टेशन और 500 डाकघरों और 150 थानों पर हमले हुए और उन्हें क्षति पहुंचाया गया। जगह–जगह टेलीफोन के तार काट दिए गए और सरकारी दतरों को क्षतग्रिस्त कर दिया गया। आंदोलन जितना उग्र था, अंग्रेजों ने उसका दमन भी उतनी ही क्रूरता से किया। विपिनचंद्र के अनुसार, 1942 के अंत तक 60,000 से ज्यादा लोंगों को हवालात में बंद कर दिया गया, जिनमें 16,000 लोगों को सजा दी गई। ब्रितानी हुकूमत ने आंदोलन को कुचलने की सारी तैयारी कर ली थी। दमनकारी कार्रवाई का अंदेशा कांग्रेसियों को पहले से ही था। इसलिए कांग्रेस ने 9 अगस्त को आंदोलन का आगाज होने से एक दिन पहले स्पष्ट कहा था कि आंदोलन में हस्सिा लेने वालों को खुद अपना मार्गदर्शक बनना होगा। आंदोलनकारी अहिंसा का मार्ग छोड़ हिंसा पर उतर आए और उन्होंने जबरदस्त तोड़–फोड़ मचाकर अंग्रेजी सरकार की चूलें हिलाकर रख दी। मगर खुद गांधी ने भी इस हिंसक आंदोलन की निंदा करने से इनकार कर दिया और अनेक गांधीवादी विचारकों व नेताओं ने हिंसक कार्रवाई को वक्त की मांग बताई।

महात्मा गांधी की रिहाई के लिए पूरी दुनिया में मांग होने लगी। मगर, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री वस्टिंन चर्चिल एक फकीर के आगे झुकने को तैयार नहीं थे। हालांकि ब्रितानी हुकूमत ने आखिरकार 6 मई, 1944 को महात्मा गांधी को रिहा कर दिया। इसके बाद अन्य प्रमुख नेताओं की रिहाई हुई। अंग्रेजों ने भारत छोड़ो आंदोलन को क्रूरता के साथ दबा दिया, लेकिन इस आंदोलन से एक बात तय हो गया कि भारतीयों को अब पूर्ण आजादी के सिवा कुछ और मंजूर नहीं था और आखिरकार अंग्रेजों को महायुद्ध में विजय हासिल करने के बावजूद भारत को आजाद करना पड़ा।

आपातकाल के सबक भूलाए ना जाएं

– कामरेड कृष्ण स्वरूप

44 साल पहले 25–26 जून 1975 को रात के अन्धेरा मे आंतरिक एमरजैन्सी का ऐलान करके देश मे इन्दिरा गान्धी सरकार ने तानाशाही थोप दी गयी थी यह वह घटनाक्रम आज भी कल की घटना लगती है। 26 जून को सुबह 8 बजे तत्कालीन प्रधान मंत्री इन्दिरा गाधी ने समाचारों की जगह सीधा राष्ट्र के नाम सम्बोधन करते हुए कहा, '' देश खतरनाक दौर से गुजर रहा है और देश मे फासस्टिवादी और प्रतक्रियिावादी ताकते विदेशी शह पर राष्ट्र को अस्थिर करने की साजिश रच रही है। उन राष्ट्रविरोधी ताकतों को कुचलने के लिए कुछ समय के लिए आन्तरिक आपातकाल (एमरजैन्सी) लागू की गयी है''। 15 मिनट के राष्ट्रीय प्रसारण के बाद अन्त में प्रधान मन्त्री ने इस राष्ट्रीय सकट की घड़ी में सहयोग का आह्वान करते हुए देश में पूर्ण शान्ति व व्यवस्था बनाए रखने का जनता से आग्रह किया।

मैने फौरन मेरे पड़ोसी गांव सिवानी बोलान की तरफ प्रस्थान किया और मुझे गांव के चौकीदार नीकूराम ने बता दिया था कि आज सुबह बडी संख्या में पुलिस के साथ फतेहाबाद के डी एस पी जय सिह ने कामरेड पृथ्वी सिह को गिरतार करने के लिए छापा मारा था, लेकिन कामरेड साहिब घर नही थे। सिवानी पहुंचकर मैंने सारे घटनाक्रम के बाबत टेक चन्द सरपंच से चर्चा की और हमने फैसला किया कि फौरन साबरवास–सिवानी की सीमा पर चला जाए। एक किसान की झोपड़ी में डेरा जमा लिया और चाय और खाना भी वही उपलब्ध हो गया लेकिन असल स्थिति से अवगत नहीं हो पाये थे।

लम्बे इंतजार के बाद साय साढे पांच बजे रेडियो पाकस्तिान ने समाचार दिया कि अपनी कुर्सी बचाने के लिए इन्दिरा गान्धी ने ''भारत मे हन्गामी हालात नफाज कर दी है और मुल्क के सभी दिग्गज नेताओं को गिरतार कर लिया गया है''। रेडियो पाकस्तिान ने बताया कि बाबू जयप्रकाश नारायण, चौधरी चरण सिह, मोरारजी देसाई, राजनारायण, ज्योर्तिमय बसु, बीजू पटनायक,.पीलू मोदी, सिकन्दर बखत, मेजर जयपाल सिह हजारो नेता जेलों में बन्द कर दिए। अन्धेरा होने के बाद हमने झोपडी को छोड़ दिया और कुम्हारिया गांव की सीमा पर मगत राम लम्बरदार की ढाणी में 24 घन्टे के लिए डेरा लगा लिया। उस ढाणी में बी.बी.सी लन्दन, वायस आप अमेरिका और जर्मन रेडियो से भारत के हालात की काफी जानकारी मिली। यह भी पता चला कि प्रेस पर सेंसर लागू कर दिया गया और सरकार

विरोधी समाचारों पर पाबन्दी लगा दी गयी है और पूरे मुल्क में भय व दमन का वातावरण कायम हो गया। रात को बड़ी सख्या में पुलिस के साथ मेरे मकान को घेर लिया गया और सारे मकान की तलाशी ली गयी। मेरी जगह मेरे पिताजी चौ. रण सिह को पुलिस पकड़कर भूना थाना में ले गयी और शर्त लगा दी कि कृष्ण स्वरुप की गिरतारी के बाद ही इनको रिहा किया जाएगा। मेरे पिताजी ही नहीं बल्कि कामरेड पृथ्वी सिह पूनियां गाव कनोह की माता जी को भी पुलिस थाना मे ले गयी और रात को उसे एएसआई गगाराम ने अपने क्वार्टर पर अपनी मां के पास रखा। पूनिया की मां को उनके भाई ईश्वर मास्टर के गिरतार करने के बाद छोडा था द्य ईश्वर पूनिया और मेरे पिताजी कई दिन थाना में रहे। एक एसएसपी कल्याण रुद्रा भूना थाना में आए और मेरे पिताजी को मेरे को पेश करने के तीन दिन के लिए छोड दिया गया। कामरेड बलबीर सिह ने रात को दो बजे मेरे पिताजी से बात करवाई। मेरे पिताजी ने मुझे बताया कि थाना में मेरे साथ अच्छा व्यवहार किया गया, यहां तक कि मुझे चाय, खाना व हुक्का की भी व्यवस्था है। मैंने कहा कि कामरेड सुरजीत ने कहा है कि गिरतार नेताओं के परिवारो और बच्चों को सम्भालने के लिए बाहर रहना जरूरी है। जमीन जायदाद व पशुओं को निलाम करने की धमकी फर्जी है। मेरे पिताजी ने तीसरे दिन अपना हुक्का, तम्बाकू व गोस्से (उपलों) की पांड के साथ थाने में प्रवेश किया और एसएसपी कल्याण रूद्रा को बताया कि उनकी पार्टी का गिरतार न होने का फैसला है और यहां रहने के लिए अपना हुक्का लेकर आया हूं। कल्याण रूद्रा ने मेरे पितजी से परेशानी के लिए माफी मागी और गगाराम एएसआई (जिसे मुझे पकड़ने की डयूटी थी) को आदेश दिया कि चौ.रण सिह को गाडी में गोरखपुर मे छोड़कर आओ। इतेफाक की बात है कि 26 जनवरी 1992 को राज्यपाल धनिक लाल के कार्यक्रम में बुजुर्ग नेता मनी राम बागडी ने मेरी और डीजीपी कल्याण रूद्रा की मुलाकात करवा दी और मुझे मेरे पिताजी की हिम्मत व व्यवहार के बाबत रुद्रा साहब ने उनकी अच्छी तारीफ की थी। मेरा पिताजी के सहयोग व हिम्मत की वजह से उस आफतकाल में मैं डटा रहा, जिस पर मुझे आज भी बड़ा गर्व है।

चुनाव रद्द होने के कारण लगी थी एमरजैन्सीः सोशलस्टि नेता राजनारायण की चुनाव याचिका पर इन्दिरा गाधी का रायबरेली से चुनाव 12 जून 1975 को रद्द हो गया था और उसको 27 जून तक अपील का समय दिया गया था, जिसकी अवधि पूरा होने से एक दिन पूर्व 26 जून को आपातकाल लागू कर दिया था। आपातकाल में सारी लोकतान्त्रिक सस्थाओं और जनवादी अधिकारों को पंगू बना दिया गया था। खुद राजनारायण, ज्योर्तिमय बसु व जार्ज फर्नाडिस जैसे बडे नेताओं को हिसार मे रखा गया था। विश्वविख्यात पत्रकार कुलदीप नैयर जैसे नेता भी जेलों में रहे थे। मुझे गिरतार न कर पाने से परेशान सरकार ने मुझे 10 नम्बरी ईश्तिहारी मुजरिम घोषित करके थाना भूना की सूची बदमाशान में शामिल कर लिया गया था। इस बदमाशान सूचि से मेरा नाम 1978 गांव का सरपन्च बनने के बाद ही हट पाया था।

18 महीने का फरारी जीवन व उसकी शिक्षाः मेरे निकट सहयोगी कामरेड पृथ्वी सिंह गोरखपरिया 26 जून 1975 को सुबह ही गिरतार लिए गये थे और उनको दी ट्रिब्यून के कश्मीरी पत्रकार एम एल काका, मनीराम बागडी, नन्दकिशोर सोनी, लाला बलवन्तराय तायल, धर्म सिह कासनी, हीरानन्द आर्य, शकरलाल, सहित अनेक नेताओं के साथ हिसार जेल में रखा गया। पुलिस की नजरों से बचकर 18 माह तक जनता के बीच रहना और उनका विश्वास जीतना काफी बडी उपलब्धि थी। उस दौर में ज्यादातर समय कर्मचारी नेताओं के ठिकानों पर रहकर गुजारा था। कभी किसी ने निजी लाभ के लिए गिरफ्तार करवाने की भी कभी नहीं सोची। यहां तक सी.आइ. डी.के सब इन्सपेक्टर राव मोहर सिह और ए एस आई गगाराम जैसे भले आदमियों से भूमिगत दौर में वास्ता पडा था, जिनका आचरण काफी मानवीय था।

आपातकाल के सबक को हमेशा याद रखेः 44 साल बाद हमे यह नही भूलना चाहिए कि आपातकाल के हालातों को दोबारा से हमें हर समय भुगतना पड रहा है। दुनिया का इतिहास इस बात का गवाह है कि जब भी कोई शासक राजनेता लोकप्रियता के चरम पर पहुँच जाता है, वह अपनी कुर्सी बचाने के लिए हमेशा गैर लोकतान्त्रिक रास्तों का सहारा लेता है। हर तानाशाह संवैधानिक सस्थाओं को कमजोर करने का हर समय प्रयास करता है। सस्थाओं की रक्षा करना सबसे बडा आज के दौर का सबक है।

नहीं रहे नासा के स्पेस एडमिनस्ट्रेशन विभाग के प्रमुख पद पर रहने वाले इकलौते हरियाणवी

भारतीय मूल के विश्व विख्यात वैज्ञानिक डॉ. जगजीत सिंह का 93 वर्ष की आयु में अमेरिका में निधन हो गया, अंतिम संस्कार 16 जुलाई को पूरे राजकीय सम्मान के साथ हिंदू रीति रिवाज से किया गया। ज्ञातव्य रहे कि डॉ. जगजीत सिंह अमेरिका के प्रख्यात शोध केंद्र नासा में स्पेस एडमिनस्ट्रेशन के प्रमुख वैज्ञानिक रह चुके थे तथा अपने जीवन के अंतिम दौर में भी वे नासा के वैज्ञानिकों का सहयोग एवं मार्गदर्शन करते रहे। उनके निधन से पूरी दुनिया में

शोक की लहर फैल गई है। भारत में भी उनकी मृत्यु से पूरा देश स्तब्ध है। डॉक्टर जगजीत का जन्म हरियाणा के झज्जर जिले के गांव भापड़ौदा के किसान परिवार में 20 मई 1926 में हुआ। उनके पिता का नाम शुभ राम और माता का नाम धनकौर था। सन 1943 में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा लायलपुर (अब पाकिस्तान) से प्राप्त की तथा पूरे संयुक्त पंजाब में प्रथम स्थान प्राप्त किया और छात्रवृत्ति पाई। इन्होंने अपने विज्ञान स्नातक एवं स्नातकोत्तर की डिग्री पंजाब विश्ववद्यिालय से की। तत्पश्चात उन्होंने न्यूक्लीयर फिजक्सि में पीएचडी लिवरपूल यूनिवर्सिटी इंग्लैंड से प्राप्त की। वह बहुत ही प्रतिभावान एवं कुशाग्र बुद्धि के विद्यार्थी थे। पंजाब विश्ववद्यिालय से उन्होंने लगातार 1943–47 तक छात्रवृत्ति प्राप्त की। वेस्ट वर्जीनिया स्टेट यूनिवर्सिटी में 1965 तक एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में सेवाएं दी। कॉलेज ऑफ द विलियम्स एंड वेरी में 1965 से 67 तक अध्यापन कार्य किया। सन 1972 से 1998 तक ओल्ड डोमिनियन यूनिवर्सिटी में फिजक्सि के प्रोफेसर के रूप में कार्यरत रहे। इस दौरान 16 विद्यार्थियों को एमएस और पीएचडी के लिए गाईड किया। नासा में विरष्ठ शोध वैज्ञानिक के रूप में लैंगली शोध केंद्र से 1978 तक जुड़े रहे। 1978 से 1994 तक इंस्ट्रूमेंट रिसर्च डिवीजन में चीफ साईटिस्ट के रूप में कार्य किया। सन 1994 से 1998 तक एक्सपेरिमेंटल एंड टेक्नोलॉजी डिवीजन में मुख्य वैज्ञानिक के रूप में कार्य किया। जबकि 1998 से 2000 तक नासा लैंगली रिसर्च सेंटर के शोध निर्देशक के रूप में कार्य किया। डॉक्टर सिंह की 246 साइंटिफिक रिसर्च पेपर प्रकाशित हुए, दुनिया के 30 प्रमुख शोध संस्थानों में उन्होंने अपने भाषण दिए, 50 विज्ञान और अभियांत्रिकी पर आधारित पुस्तकों की समीक्षा की, एनवायरमेंट एंड एयरोस्पेस मैनेजमेंट साईंस पर आधारित दो पुस्तकों का संपादन किया, दो राष्ट्रीय विज्ञान सम्मेलन की अध्यक्षता की, डॉक्टर जे.जे. सिंह को नासा अपोलो अचीवमेंट अवॉर्ड, नासा लैग अवॉर्ड, नाशा स्पेशल ग्रुप सर्टिफिकेट मोमेंट अवॉर्ड, 6 टेक्नोलॉजी यूटिलाइजेशन अवॉर्ड, 5 यूनाइटेड स्टेट सिविल सर्विस तथा आउटस्टैंडिंग प्रोफेशनल्स अवॉर्ड प्राप्त किए, इसके अलावा 10 यूनिवर्सिटी स्टेट पेटेंट्स आपके नाम से है इसके साथ ही 2004 में आपको अमेरिका में मेडल ऑफ ऑनर तथा फेम फॉर आउटस्टैंडिंग लीडरशिप 2005 में सम्मानित किया गया, 2005 में इंटरनेशनल अवार्ड ऑफ द मेरिट कैम्ब्रिज यूके में आपको प्रदान किया गया। डॉक्टर जगजीत सिंह ने न्यूक्लीयर फिजक्सि शोध पूर्ण कर इंग्लैंड से वापस भारत आए। भारत आने के बाद उन्होंने भारत के प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू से मुलाकात की और अपने देश में ही न्यूक्लीयर लैब स्थापित कर शोध का प्रस्ताव किया। जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें देश की खराब आर्थिक स्थिति का हवाला देकर असमर्थता जाहिर की। इसके बाद डॉ. सिंह ने अमेरिका की ओर रूख किया। जहां उन्होंने पूरी दुनिया में भारत का नाम रोशन किया अंतिम समय में उनकी इच्छा अपने देश की सेवा करने की रही उन्हें अपने गांव और अपने देश के प्रति गहरा लगाव था। महत्वपूर्ण पद पर होने के बावजूद भी वे भारत आते जाते रहते थे। उन्होंने अपने पैतृक गांव भापड़ौदा में अपना फार्म हाउस बनवा रखा था। जहा पर वे आकर रुकते थे तथा ग्रामीण युवाओं को कड़ी मेहनत और लग्न से पढने के लिए प्रेरित करते थे। उनका मानना था कि भारतीय युवाओं में प्रतिभा की कमी नहीं है लेकिन उचित मार्गदर्शन और सुविधाएं न मिलने से वे पिछड़ जाते हैं। डॉ. सिंह आजीवन अविवाहित रहे तथा उनका कहना था कि उन्होंने तो वज्ञिान से ही शादी कर ली थी।

Demographic Dividend or Disaster

R.N. Malik

India is already an overpopulated country. According to 2011 census, India's population on 1.4.2011 was 122 crore with an annual increase of 1.8 crore. With that rate of growth, Indian population would be 140 crore in 2021 and 158 crore in 2031. (Presently the figure is nearly 137crore.) Meanwhile, a U. N. report released on 18th June warns that India will be overtaking China in population count (150 crore) by the year 2027 and would become the most populous country of the world. So Malthusian theory is already at work and has entered the critical phase of straining the already scarce resources of the country. An addition of 1.8 crore new babies (almost equal to one Australia) annually will make the social and economic life of people extremely chaotic in the years to come. Therefore need for drastic control of bludgeoning population has become a national emergency.

The adverse impact of over population in the country is already on display. Heart wrenching and dehumanizing poverty is the principal outcome. Accordingly 26 crore people are languishing below poverty line and an equal number (called marginally poor people) are subsisting just above poverty line and lead a hand to mouth livelihood. Besides this, overcrowding at public places, paralysis of health care system, malnutrition of young children (recall deaths in Mujjafarpur hospitals) slums, insanitation, massive unemployment , deprivation of basic essential facilities like drinking water supply, haphazard growth of urban areas, conflicts, choking air pollution, climate change,

दूसरों के अनुभव से होशियारी सीखने की मनुष्य की इच्छा नहीं होती, उसको स्वतंत्र ठोकर चाहिए। –विनोबा भावे

rising crime graphs, end of plenty etc are the other signatures or negatives of this malady. 52 crore people (1.5times the population of America) constantly grappling with poverty is a painful spectacle and a big blot on the fair name of a respectable country. Barring four northern states, vast stretches of poverty are omnipresent in every state. As a result, India occupies 134th place in the U. N. list of Human Development Index. More so ,India still carries the tag of being an underdeveloped country even after 70 years of Independence.

All this is happening because successive govts paid little attention towards controlling exponential growth of population. India would have been in a fairly comfortable position even with existing level of infrastructure had her population been 80 crore by now (population in 1985).Very strangely, our learned Prime Minister still glorifies likely demographic disaster as demographic dividend.

Now imagine the future scenario in the country for the year 2031when Indian population would be around 158 crore-a really frightening figure. 60 crore people would be mushrooming in already congested cities and one billion people in villages that are already bursting the seams. Further expansion of boundaries would be at the cost of already shrinking agricultural lands. Water, the scarcest resource, would become the rarest commodity and be available at a premium thus affecting agricultural productivity substantially. Vast army of unemployed impetuous youths will grow in size and may lose their patience to create anarchical environment. Will the country be able to accommodate or sustain additional 21 crore people during next twelve years without affecting basic facilities needed for a healthy growth of human body. The answer is clear No. Miseries will not end here but prolong for an indefinitely long period to end in a disaster. According to U.N. model, Indian population will rise to 1.70 billion by 2060 and only then stabilize.

The only narrative of the present new government on economic front is to develop India into a 5.0 trillion dollar economy by 2024. (Present worth is 2.8 trillion dollars), This is a very tall order because you require G. D. P. to grow at a steady rate of 12% during next five years to lift it from the present fledgling rate of 5.8%.The Prime Minister has not bothered to outline the technique to achieve this humongous milestone in the absence of a precise road map.

No country in the world has attained prosperity and required human development index without putting brakes on its bludgeoning population. China did it in 1978 and adopted one child policy and consequently her population will come down to 140 crore by 2050 as per U.N. Her ultimate target is to bring the population down to 100 crore report. She was lagging behind India in all economic parameters till 1978. Now see the difference in the economic prosperities of the two countries. Similarly take the case of America. Her population was 17 crore in 1964. Now it is 33 crore in 2019 i.e. an increase of 16 crore (including arrivals of immigrants) in 55 long years against 18 crore in one decade in India. 20 countries are presently in the process of achieving negative growth. Population of Spain (4.7 crore) declines by one lac per year and that of Japan (13 crore) by one million per year.

Therefore Indian government is living in a fool's paradise to believe that she can make India a developed and prosperous country without recourse to drastic measures to bring down the population growth rate to a maximum of two crore per decade. Let us also not forget that 65% population of India is below the age of 45 years- an indicator pointing towards creating a vast army of unemployed youths. Secondly 80% pregnant mothers belonging to lower inome groups are anaemic and new borne babies are bound to have congenital deficiencies and stunted growth.

Now the Honourable Prime Minister has echoed the slogan of New India again at a very high decibel in the first session of the new Parliament. But the issue of decelerating population growth does not find any mention either in the Presidential address or the two speeches made by P.M. in the Parliament. Opposition members are equally guilty for not raising this issue either. Both Planning Commission and NITI AYOG are to be equally blamed for not advising respective governments to take drastic measures to control population growth to a safe or sustainable level. As usual, the warning of U.N. report has gone unheeded throughout the country.

Let us assume that government is able to boost 12%growth to achieve the target of building 5 trillion dollar by 2024 and 8.8 trillion dollar economy by 2031.Even then demographic disaster will loom large because of many contingent factors like limits to growth imposed by limited resources (particularly water), overcrowding, increasing incidence of morbity (14 lac new cases of cancer are coming up every year.), unequal distribution of wealth, malnutrition among children, shrinking agricultural land per family etc. Things are going to fall apart because no government, however efficient, can manage governance of a country whose population increases by 18 million every year. But the million dollar question is what is the harm if population control measures are taken up simultaneously with the economic march of the Govt. It only needs to take two simple measures I. e. aggressive education and awareness campaign and introducing a system of incentives and disincentive. For example, the government freebies may be doled out to only planned families. These two measures will yield wonderful results because most pregnancies in lower income groups are involuntary. The Indian conundrum is that those who should produce more are producing less and vice-versa.

Why government of the day is so insensitive to tackle this Amazonian problem by taking the aforesaid measures is beyond comprehension. Probably the Govt has an inherent phobia to think that introducing a system of disincentives may affect the election prospects of the ruling party. (Now Sh. Rakesh Sinha, BJP M.P. Rajya Shaba and member of R.S.S. think tank has taken upcudgels to table the Population Regulation Bill. Neither the media has extolled his efforts nor the political class talks about it. Accordingly the fate of the bill is thoroughly uncertain.) Now the ball lies in the court of the people to do something to avoid this impending dreadful disaster which is already in progress due to continuing implosion of population bomb. They have to realise that India is in now or never position to defuse the population bomb and the Govt. of the day will continue to remain insensitive towards this burning problem because of its vote bank politics philosophy.

अब हम स्मृति-लोप के ही शिकार हैं?

– डॉ0 धर्मचन्द्र विद्यालंकार

''वे अज्ञान को ही परम ज्ञान समझते हैं। उनकी प्रत्यक्ष भौगोलिक यर्थाथ की जानकारी शून्य है, पिफर भी वे क्रौंच और मधु एवं क्षीर–सागरों की कल्पना अपने पुराणों में करते हैं। उन्हें अपने आसपास के पडौसी परिवेश तक की ठीक से जानकारी नहीं हैं। फिर भी वे स्वयं को ही ब्रह्मज्ञानी मान बैठे हैं। जो कुछ थोडा–बहुत ज्ञान उनको ज्योतिष अथवा नक्षत्रा विज्ञान और वैद्यक का है। उसको भी वे किसी और को देना उचित नहीं समझते।''

उपर्युक्त टिप्पणी भारतीय पण्ड़ितों की कूपमंडूकता को लेकर प्रथम भारतविद् अल्बेरुनी की है जोकि ज्योतिष और भूगोल का विद्वान था और ग्यारहवीं शताब्दी के आरंभ में मुहम्मद गजनवी के साथ भारत आया था। उसने सारे ही भारतवर्ष का भ्रमण किया था और यहाँ की भौगोलिक स्थानों की दूरी और स्थिति के बारे में पहली बार सही–सही जानकारी विश्व को दी थी। हालांकि वह मूलतः नक्षत्रा विज्ञानी ही था।

उपर्युक्त सन्दर्भ को हम डॉ० बी.आर. अम्बेदकर के इस कथन से भी जोड़कर देख सकते हें– ''ब्राह्मणों के वर्चस्व का कारण उनका ज्ञान नहीं अपितु बहुजनों का अज्ञान ही था।'' क्योंकि उन्होंने स्त्रियों और शूद्रों को शिक्षा के अधिकार से ही वंचित किया हुआ था। अतएव उनका अज्ञानी होना सहजन ही संभव था। जबकि अल्पज्ञानी ब्राह्मण ही 'अन्धें में कानों' की भाँति ज्ञान के बेताज बादशाह बनकर बैठे हुए थे। वरना उन्होंने सिकंदर के संग–साथ आने वाले ज्योर्तिविदों से जहाँ पर ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त किया था। वहीं पर उनसे ही उन्होंने गणित और वैद्यक का भी ज्ञान ग्रहण किया था। इस बात की सच्ची साक्षी स्वयं गर्ग–संहिता है, जिसमें यह स्वीकारोक्ति है– ''यद्यपि ये यवन–मलेच्छ और विधर्मी हैं तदपि वे ऋषियों की भांति पूज्य है क्योंकि उन्होंने ही हमें 'नक्षत्रा–विज्ञान से लेकर वैद्यक और गणित तक का ज्ञान दिया है।'' मूर्तिकला भी गाँधर में उन्होंने ही विकसित की थी जोकि बाद में मथुरा तक में कुषाण–काल में आ गई थी।

चलो पुरातन हमारे गर्गाचार्य जैसे गुणी–ज्ञानी लोगों में इतना कृतज्ञता का भाव तो था। अब जो इतना विषाक्त वातावरण एक तथाकथित सांस्कृतिक संगठन ने पिछले पचास–साठ वर्षों में बनाया है, वहाँ पर तो कृतज्ञता का नामोनिशान भी नहीं है। वे तो बस महाभारत के इस महावाक्य के ही अंधभक्त है कि ''जो महाभारत (ग्रंथ) में नहीं है, वह कहीं पर भी नहीं है जो कुछ यहाँ है, वहीं और कहीं है– यन्न भारतम् तन्न भारतम्।'' जैसेकि व्यास जी ने मानो सारे ही ज्ञान–विज्ञान को पोटली में बांधकर पटक दिया हो। जबकि ज्ञान और विज्ञान अनुभव से उत्पन्न होते हैं और प्रयोग और परीक्षणों से ही अग्रसर होते हैं, एक पीढी से दूसरी पीढी में। लेकिन हमारे भारतीय आप्त और त्रिकालज्ञ पण्डितों और ऋषियों ने तो इल्हाम या दैवीय आदेश से ही उसको बिना किसी प्रकार के अनुभव के ही पा लिया था। जबकि स्वयं गीता में यह साक्षी है कि ब्रह्मं कर्म समद्भवम्'' अर्थात् ज्ञान, अनुभव और कर्म अथवा अभ्यास से ही उत्पन्न होता है।

इधर हमारे राष्ट्रीय स्वयं–सेवकों ने गणेश की कथा में प्लास्टिक सर्जरी का विज्ञान खोज मारा है तो अगस्त्य ऋषि को पहला टेस्ट–ट्यूब बच्चा बता दिया है। भले ही उनके पूर्वजों ने कभी पतंग तक आकाश में न उडाई हो, लेकिन उनके ज्ञान–ग्रंथों में मन की गति से उडने वाले पुष्पक विमानों का.मनमोहक वर्णन है। उल्टे उन्होंने अपने ग्रंथों में विज्ञानी जनों को ही मायावी बताया है। जैसे कि नल और नील एवं मय नामक वास्तुकार को पुराणों में मायावी या राक्षस ही बताया गया है। इसी प्रकार से कार्य कुशल कामगारों को ही वहां पर कर्मिणः या कमीन बताया गया है। ये धर्मधुरंधर अज्ञान का ही ज्ञान के नाम पर विस्तार करके पोंगापथी राजनेताओं के लिए ही राजपथ प्रशस्त करते हैं। पं० जवाहरलाल नेहरू ने 'विश्व–इतिहास की झलक' नामक अपनी पुस्तक में यह रेखांकित किया है कि ''जहाँ–जहाँ पर भी साम्राज्यवादी लोग (यूरोपीय) अपने–अपने उपनिवेश कायम करना चाहते थे तो वे वहाँ पर पहले–पहल अपने धर्माचार्यों को पृष्ठभूमि तैयार करने के लिए भेजते थे।'' जैसेकि भारत के मालाबार तट पर प्रथम शताब्दी में ही ईसाई पादरी आ गये थे तो अरब के मौलाना भी व्यापारियों के साथ छठी–सातवीं शताब्दियों से ही आने लगे थे।

इटली के अन्तोनियो ग्राम्सी जैसे समाज–विज्ञानी ने प्रभुत्व और वर्चस्व में अन्तर किया है। उसके मतानुसार प्रभुत्व यदि सैन्यशक्ति द्वारा किसी देश या जाति पर अधिकार कहलाता है तो वर्चस्व बौद्धिक विचारधरा के आधर पर ही उसका अनुकूलन है।'' जैसाकि भारतीय ब्राह्मणों ने वर्ण–व्यवस्था के माध्यम से ही स्वयं को सर्वश्रेष्ठ मनवाकर सामाजिक सत्ता के शीर्ष पर रखा है। शेष वर्णों का अस्सी वर्षीय वृद्ध भी इसीलिए उनके आठ वर्षीय ब्राह्मण वटु को पिता के पिता के समान समझकर 'दादा' बोलकर उसका जो स्वागत–सत्कार करता है। यही तो वर्गीय वर्चस्व है कि एक अनुत्पादक वर्ग ही सामाजिक संरचना में सिरमौर बन गया था। जबकि उत्पादक श्रमिक–शूद्रों को ही समाज के सबसे निचले पायदान पर पटक दिया गया था। अतएव यदि प्रभुत्व सैन्य–शक्ति के बाहुबल से स्थापित किया जाता है तो वर्चस्व परजीवी वर्ग अपने बुद्धि–बल से कायम करते हैं। प्रभुत्व प्रत्यक्ष दिखाई भी देता है। अतएव उसका प्रतिकार भी प्रायः ही किया जा सकता है। लेकिन बौद्धिक वर्चस्व एक प्रकार का मानसिक अनुकूल ही है, अपने विरोध

ा का अतएव वहाँ पर प्रतिकार या प्रतिरोध का प्रश्न ही दरकिनार कर दिया जाता है। उदाहरण के लिए हम यहाँ पर एक दृष्टान्त ले सकते हैं। संयुक्त पंजाब के महान किसान–मसीहा दीनबंधु चौ० छोटूराम किसानों से ये दो बातें कहा करते थे–

''ए भोले किसान तू मेरी दो बात मान ले,
बोलना ले सीख तू अर दुश्मन पहचान ले।''

अर्थात् एक तो तुम्हें अपने अधिकारों के प्रति मुखर होकर बोलना सीखना होगा। दूसरे, अपने दोस्तों और दुश्मनों की सही–सही पहचान करनी होगी।'' आजकल किसानों ने पढ़–लिखकर बोलना तो सीख लिया है लेकिन अब उन्हें अपने वर्ग–शत्रुओं या दुश्मनों और वर्ग–मित्राों या दोस्तों की पहचान कहाँ रह गई है। क्योंकि वर्चस्वशाली ब्राह्मणवादी संघी विचारधारा ने आज उनका वर्ग–बोध ा ही विलुप्त कर दिया है। इसलिए अपने कमेरे मजदूर और किसान वर्ग के मुस्लिम ही आज हिन्दू–किसानों को अपने सबसे बडे शत्रु दिखाई पड़ते हैं और शोषक व शहरी सवर्ण हिंदू ही अब उनके मित्र हैं।

जबकि चौ० छोटूराम यही प्रायः कहा करते थे– ''ए! किसानों मैं तुम्हारे लिए दिनरात अधिकारियों से संघर्ष करूँगा लेकिन ये मुल्ला–मौलवी और ज्ञानी–ग्रंथी तथा पोंगा–पण्ड़ित तुम्हें आपस में मत–मजहब का क्लोरोपफार्म सूँघाकर लडवायेंगें। तुम्हें इनके बहकावे में नहीं आना है।'' इसीलिए तो उन्होंने हिन्दू किसानों से लेकर सिख और मुस्लिम किसान जनता को अपने साथ एकजुट करके शोषकों के विरूद्ध लामबन्द कर लिया था। तभी परतन्त्रता काल में भी संयुक्त पंजाब में ही सर्वप्रथम किसान–राज का सुनहरी प्रभात आ सका था। हमें यह बडे ही कष्ट के साथ लिखना पड रहा है कि हमारी नई पीढी न तो अब अपने किसान महापुरुषों के जीवन–चरित्रों को पढती है और न ही वह उनके जीवन–संघर्षों से कोई पावन प्रेरणा ही प्राप्त अब करती है। सवर्ण शहरी सेठों के मीडिया के भ्रामक और विषाक्त प्रचार ने उनकी वर्गीय चेतना को ही जैसे अब कुन्द कर दिया है। इसीलिए मुस्लिम समाज के कार्यकुशल कारीगर ही आज उन्हें अपने स्थायी शत्रु भासते हैं तो अपने शोषक परन्तु परजीवी सवर्ण समाज के प्रखर पुरोध ही उन्हें आज अपने अनन्य उद्धारक और पतित पावन प्रतीत होते हैं?

जिन मुस्लिम किसानों और कामगारों के प्रति हमारे ये शहरी सवर्ण सज्जन दिन–रात विष–वमन करते रहते हैं, वही हमारे लिए अलीगढ में ताले बनाते हैं तो पिफरोजवाद में वही हमारी हिन्दू माता–बहनों के श्रृंगार के लिए चूडियाँ ढालते हैं। वही तथाकथित यवन और मलेच्छ बनारसी साडियाँ बनाते हैं तो मधुबनी पेंटिग्स भी तो उनके कला–कौशल का ही तो कमाल है। यह कितने आश्चर्य की बात है कि जिन परजीवी सवर्ण वर्गों ने भूलकर भी कुछ उत्पादन समाज में नहीं किया है, आज वही सबसे बडे समाज–निर्माता और देशभक्त हैं। जबकि श्रेष्ठ उत्पादक और निर्माता किसानों और कामगारों को ही आजकल धर्म के नाम पर आपस में लडवाकर तीन–तेरह किया जा रहा है। तभी तो जिस राजसत्ता को किसानों और कमेरे वर्ग के जननायक सुदीर्घ संघर्ष के पश्चात खेत–खलिहानों और गाँवों व गरीबों की चौपालों तक लेकर आये थे, वह आज एक बार पुनः उन्हीं शहरी सवर्णों के स्वर्ण सोधें में कैद होती क्यों चली जा रही है। महामनीषी कॉर्लमॉर्क्स ने इसीलिए को कमेरे वर्गों को मदहोश करने वाली अपफीम ही तो बताया था।

यह सब उन्होंने इसलिए कहा था कि धर्मतंत्र या कि ध ार्मिक सत्ता समाज में शासक वर्ग अथवा राजसत्ता के लिए वैचारिक वर्चस्व कायम करके अनुकूलन का ही तो कार्य करती है। क्योंकि उन दोनों का आपस में नाभि–नाल सम्बन्ध जो रहा है। यदि राजा ही पुरोहितों के लिए मंदिर, घाट या तालाब और प्याऊ बनवाता था तो उसके बदले में परजीवी पेटपाल पुजारी वर्ग ही तो राजाओं को राम–कृष्ण की दिव्य संतान बखानता था और उन्हें ही धर्मात्मा और पुण्यात्मा होने का प्रमाण–पत्रा प्रदान करता था। पुरातन युग में पुरोहित वर्ग स्वयं को धरती पर ईश्वर का प्रतिनिधि ा या ब्रह्मा का वंशज मानता था तो राजा को वह अपना ही प्रखर प्रतिनिधि मानता था। क्योंकि वही सभ्य वर्ग तो उसके धर्मादेशों को विधि–संहिता मानकर उनका अनुपालन प्रजा से भी कराता था। अतएव धर्मसत्ता सदैव ही राज्यश्रय में ही तो फलती–फूलती रही है। भारतवर्ष के इतिहास के झरोखे से भी हम इस बात को देख समझ सकते हैं कि जब तक सम्राट अशोक और हर्षवर्धन जैसे शासक सत्ता में रहे तब तक ही समतामूलक बौद्ध धर्म की शिराएँ सरस रही थी और वह व्यापक होकर वैश्विक धर्म भी बन गया था।

इसी प्रकार से जैसे आठवीं शताब्दी के पश्चात राजपूत राजभक्ति का उदय भारत के राजनीतिक क्षितिज पर हुआ था तो सतधर्म की शिराएँ भी सूखकर मुरझा गईं थी और उसके स्थान पर नवीन ब्राह्मण धर्म किवां वर्तमान हिन्दू धर्म ही राजधर्म बन बैठा था। यहाँ पर एक बात और धयातव्य है कि यदि राजसत्ता, धर्मसत्ता के लिए आर्थिक आधर बनती है तो धर्मसत्ता ही किसी भी राजसत्ता को सामाजिक और सांस्कृतिक वैध्ता भी तो प्रदान करती है। उदाहरण के रूप में मौर्य मोर जाटद्ध और गुप्त वंशज शासक किसी पुरातन आर्य क्षत्रिय वंश से उद्भूत या सम्बद्ध नहीं थे। अतएव उन्होंने वैधता प्राप्त करने के लिए ही ब्राह्मणी धर्मसत्ता का सहारा लिया था, वरना तो मौर्य वंश और गुप्त वंशों (धारण जाट वंश) को ब्राह्मणों ने अपने पुराण–साहित्य में बजाय आर्य–क्षत्रिय के शूद्र प्रायः ही तो लिखा था। क्योंकि वे विधवा–विवाह जैसी लौकिक परम्परा के ही विश्वासी थे। जबकि ब्राह्मणीय धर्मशास्त्र नारीमात्र को पुर्नविवाह का अधिकार कहाँ देता था क्योंकि मनुस्मृति का धर्मादेश है– ''न हि नारी पुर्नविहामहखत।'' अर्थात् स्त्री मात्रा को विधवा–विवाह का अधिकार नहीं है।

अतएव मध्य किसान जातियों जाट–गूर्जर–आभीर–मराठादि को केवल पुर्नविवाह की पावन प्रथा का प्राणपण से परिपालन करने के कारण ही तो ब्राह्मण पुरोहितों ने उन्हें वर्षल और व्रात्य अथवा दासीपुत्र अपने शास्त्रों में लिखा है। राजपुत्र वे थे जोकि ब्राह्मण पुरोहितों से विधि निहित वैदिक विवाह संस्कार कृत रानियों की राजन्य संतान थे। जबकि दासीपुत्रा कही जाने वाली मध्य किसान जातियाँ विधवा–विवाह रचाती थीं, जिनका विधिवत् विवाह–संस्कार ब्राह्मण–पुरोहित कहाँ किया करते थे। अतएव पुर्नविवाहित उन्हीं दासियों की कोख से समुत्पन्न संतान ही तो उनकी दिव्य दृष्टि में दासीपुत्र थी। अतएव अर्थापत्ति से राजपुत्रा शब्द–संज्ञा के विरूद्ध इस प्रकार के और भी कई लौकिक प्रतिमान थे, जिनका परिपालन हमारी मध्य में किसान जातियाँ किया करती थी। जैसेकि एक ही कुल–वंश या गोत्र में लडकियों और लड़कों के विवाह रचाना भी ब्राह्मणीय सांस्कृतिक प्रतिमानों के विरुद्ध था। इसी प्रकार से नेग– नाते में बडे पुरुष को ही सर्वप्रथम हुक्का–पानी राजपुत्रों या द्विजातियों में दिया जाता था। जबकि शूद्रमन्य किसान जातियों में हुक्का–पानी बजाय नेग–नाते की छोटाई–बडाई के वयक्रम के आधार पर ही दिये जाते हैं। यदि चाचा बाल–वयस है तो उसको पहले हुक्का नहीं दिया जाएगा, बजाय उसके वयवृद्ध भतीजे को ही सिरहाने पै बिठाकर पहले हुक्का दिया जाता है। यही वे लौकिक सांस्कृतिक प्रतिमान थे जोकि द्विजातियों के सांस्कृतिक प्रतिमानों की दृष्टि में निम्न मान्य थे। इसीलिए ऐसा व्यवहार–बर्ताव करने वाली मध्य किसान जातियों को ही सछूत सतशूद्र या दासीपुत्र अथवा कुजात कहा गया।

पहले हम यह देखते थे कि सांयकाल अलाव या हुक्कों पर बैठकर ही सही हमारे अशिक्षित पूर्वज भी परस्पर में विचार–विनिमय किया करते थे। उनमें उच्चकोटि की वर्गीय चेतना का विचार–बोध था क्योंकि तब पूँजीपतियों द्वारा संचालित समाचार–पत्रा और संचार–साधन नहीं थे। आजकल सारा ही प्रचार–तंत्र या विचार–तंत्र का कार्यभार उद्योगपतियों के जनसंचार माध्यमों ने संभाल लिया है। फेसबुक और यू–ट्यूब तो और भी असत्य और अपफवाहों का जनक और विस्तारक है। जिस पर तथाकथित सांस्कृतिक राष्ट्रवादियों का ही अब एकक्षत्र और अबाध ा अधिकार है। जैसेकि यह भ्रान्ति फैलाना कि नेहरू खानदान बजाय ब्राह्मण के मुस्लिम ही है। जबकि उसका छः–सात पीढियों का हिन्दू होना इतिहाससिद्ध है। नेहरू जी की आधुनिकतावादी और उदार जनतांत्रिक छवि को इसी बहाने विकृत किया जा रहा है।

इसलिए अन्धराष्ट्रवाद या उग्रराष्ट्रवाद एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद हमारी युवापीढी की वर्गीय राजनीतिक चेतना को भोथरे बनाने के ही तो अनन्य उपकरण आज सिद्ध हो रहे हैं। जिन लोगों के पूर्वजों ने भूलकर भी कभी स्वाधिनता संग्राम में सक्रिय सहकार नहीं किया, वही आजकल परम देश–भक्त हैं? जो भी धर्मनिरपेक्षता या सहिष्णुता की बात करता है, वही अब देशद्रोही उन्हीं के द्वारा बताया जा रहा है। यह कितने आश्चर्य का विषय है कि मुम्बई में 11/8 का आतंकी हमला होने पर तत्कालीन महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री विलासराव देशमुख को पदत्याग करना पडा था तो शिवराज पाटिल केन्द्रीय गृहमंत्री तक ने अपने पद से इस्तीफा दिया था। और तो क्या एक और केन्द्रीय गृहमंत्री चिदम्बरम् तक ने अपना त्याग–पत्र दिया था। पुलवामा में हमारे चालीस–पैंतालीस सैनिकों की जानें केवल सरकारी सुरक्षातंत्र की लापरवाही की वजह से हुई और आतंकी भी कोई पाकिस्तानी नहीं बल्कि कश्मीरी ही था। लेकिन प्रचार–तंत्र का यह कला–कौशल देखिये कि एक भी सांस्कृतिक राष्ट्रवादी सरकार के पुरोध ने इस हमले की नैतिक जिम्मेदारी नहीं ली। भले प्रश्नकर्ता विपक्षियों को ही राष्ट्रद्रोही करार दे दिया गया है। क्योंकि वर्चस्ववादी वर्ग सर्वप्रथम वैचारिक संस्थानों पर ही तो अपना अबाध एकाधिकार कायम करते हैं।

इस बार बेरोजगारी, विषमता और किसानों की ऋण ग्रस्तता जैसे ज्वलंत मुद्दों की बजाय राष्ट्रीय–सुरक्षा को ही एकमात्रा मुद्दा बनाकर यह चुनाव लड़ा गया है। सामन्ती मनोवृत्ति वाले किसान–केसरी तो स्वयं ही कुलघाती या स्वकुलभक्षी सिद्ध हुए हैं। चौ० अजीत सिंह ने मथुरा जैसी जाट बहुल सीट से किसी स्वजातीय व्यक्ति को टिकिट नहीं दिया उनकी अपनी हैसियत भी इस बार कुलजमा तीनों सीटों की ही रह गई है।

इसी प्रकार से अखिलेश यादव अपने चाचा शिवपाल सिंह के लिए एक भी स्थान छोडने को उद्यत नहीं हुए। उधर तेजस्वी यादव ने मधेपुरा से पप्पू यादव जैसे संघर्षशील और सेवाभावी यादव नेता को अपना समर्थन नहीं दिया यही क्यों, कन्हैया कुमार जैसे नवोदित नक्षत्रा को राजनीतिक पटल पर न उभरने देने के लिए एक भी स्थान उसके लिए महागठबन्धन में नहीं छोड़ा था। उधर राष्ट्रीय कांग्रेस के पर कतरने के लिए उसे बजाय 11 के नौ ही स्थान दिये हैं। जबकि मांझी और साहनी जैसे निराधर नारायण व्यक्तियों को तीन–तीन सीटें बख्श दी गई हैं। इस प्रकार से ये किसान केसरी स्वकुलघात में ही सलंग्न और सन्नद्ध थे। हरियाणा के चौटाला परविार में भी आपस में ही सिरपफुटव्वल जारी है। तो श्री भूपेन्द्र हुड्डा ने कुरुक्षेत्र से बजाय श्री सुरजेवाला जैसे स्थानीय व्यापक जनाधर वाले नेता के एक बाहरी सिख जाट को ही वहाँ से उम्मीदवार बनवाया पर चलो साढे चार लाख वोटों वाले जाति वर्ग को कम से कम उम्मीदवारी तो मिली।

किसानों में भी अब एक दलाल वर्ग उत्पन्न हो गया है जोकि नव धनाढ्य भी है। जिसके पास रैली के लिए थैली है। उसका विचार–दर्शन बजाय वर्गहित के व्यक्तिगत हितलाभ तक ही सीमित है। यह पूँजीवादी व्यक्तिवाद कहीं पर परिवारवाद से भी भयावह है। राजनीति में परिवारवाद की बहस अब बेमानी ही है

क्योंकि आखिर राजपरिवार के टिकटार्थी का भी चुनाव जनता ही करती है। बजाय रक्त सम्बन्धी परिवारवाद से भी कहीं अधिक विषाक्त एक विभाजनकारी विचारधरा से युक्त परिवारवाद ही है? जोकि देश को सदैव धर्मों और जातियों के चश्मों से ही देखता है और अल्पसंख्यकवाद के ऊपर बहुसंख्यकवाद का प्रभुत्व बलपूर्वक कायम करना चाहता है।

गोरक्षा, धर्मरक्षा और लव जेहाद के नाम पर आये दिन हमारे सवर्ण स्वामी हमारे कृषक युवाओं के मन–मस्तिष्क को भी विकृत और विषाक्त कर रहे हैं। अब वे किसान–एकता अथवा मजदूरों की मजबूती की बजाय मत–मजहब की ही बातें अधिकतर करते हैं। संभवतः उन्हें आज यह ज्ञात नहीं है कि हमारे किसान केहरियों ने किस प्रकार से सतत सुदीर्घ संघर्ष करके राजसत्ता को गाँवों और गरीबों की चौपालों तक पहुँचाया था। जबसे यह धर्म और पंथ की राजनीति आरम्भ हुई है, आज किसान और गाँव–देहात के मुद्दे राजनीति से ओझल हो चले हैं। अतएव आज हम स्मृतिलोप के ही तो शिकार हो रहे हैं।

वैवाहिक विज्ञापन

- *SM4 Jat Girl (DOB 26.07.95) 24/5'2" GNM, BSc Nursing from MMU Mulana, Ambala. Avoid Gotras: Chhikara, Saroha, Malik, Dahiya. Cont.: 9560857397, 9467630182*
- *SM4 Jat Girl (DOB 03.10.92) 26/5'5" BSc, MSc Physics from P.U. Chandigarh. BEd. HTET, CTET cleared. Employed TGT Science in Janendra Public School Panchkula. Family settled in Panchkula. Avoid Gotras: Gehlayan, Khatkar, Chhikara, Boora. Cont.: 7009312721, 9467630182*
- *SM4 Jat Girl (DOB 02.11.93) 25/5'3" MA (English), JBT, BSC Non-medical, Employed in a reputed Company at Mohali. Avoid Gotras: Mann, Malik, Jaglan. Cont.: 9416650693*
- *SM4 Jat Girl (DOB 14.10.93) 25/5'4" MSc Math. Avoid Gotras: Joon, Bakhal, Sangwan, Gahlayan. Cont.: 9467311110*
- *SM4 Jat Girl (DOB April 89) 30/5'4" MCA from P. U. Chandigarh Employed in Punjab & Haryana High Court. Avoid Gotras: Sheoran, Punia, Sangwan. Cont.: 9988359360*
- *SM4 Jat Girl 25/5'4" B.Sc, BEd., MSc Math, Employed as Math teacher in coaching centre. Parents Government employees. Avoid Gotras: Kaliraman, Panwar, Jani. Cont.: 9416083928*
- *SM4 Jat Girl (DOB August 90) 28/5'3" B.Tech)CSC) MBA, Employed in reputed Consultant (MNC) Earnst & Young Company, Father retired, Mother self employed. Avoid Gehlan, Kashyap, Dagar. Cont.: 9417055709, 9464989509*
- *SM4 Jat Girl (DOB Oct.93) 25/5' B. Tech Electronics & Communications from GJU, Hisar. Avoid Gotras: Nain, Redhu, Sheokand. Cont.: 9613166296, 9416942029*
- *SM4 Jat Girl (DOB Jan. 95) 24/5'1" B. Com from Hisar. Avoid Gotras: Nain, Redhu, Seoukand. Cont.: 9613166296, 9416942029*
- *SM4 Jat Girl (DOB 18.04.91) 28/5'3" BPT, MPT CMT, Employed as consultant Physiotherapy in private Hospital in Panchkula. Avoid Gotras: Chhikara, Dahiya, Bajar. Cont.: 9467680428*
- *SM4 Jat Girl (DOB 07.05.90) 29/5'5" M.Sc Bio Informatics, BSc Biotechnology. Working in Research Company with package 3.7 lakh PA. Father ex-IAF. Now working in Haryana govt. Brother, Bhabi working in UK. Avoid Gotras: Katira, Khatkar, Boora. Cont.: 9988643695, 6283129270*
- *SM4 Jat Girl (DOB 28.02.87) 32/5'2" BSc. MSc. Hons. in Physics, PhD in Physics. Working as Assistant Professor in Physics on regular basis in Chandigarh. Avoid Gotras: Malik, Kaliraman, Dahiya. Cont.: 9988336791*
- *SM4 divorced Jat Girl (DOB 12.05.88) 30.10/5'2" BSc. (MLT), MSc (MLT) from Punjab Technical University Jallandhar. Working as Lab Incharge in reputed Paras Hospital Sector 22, Panchkula. Father in Government job at Panchkula. Avoid Gotras: Mittan, Kharb, Dahiya. Cont.: 8146082832*
- *SM4 Jat Girl (DOB 29.11.89) 30/5'4" M.Sc Chemistry, Doing job in School. Avoid Gotras: Hooda, Lamba, Pawria. Cont.: 9416849287*
- *SM4 Jat Girl (DOB 18.08.91) 28/5'3" Diploma, B.Tech in Electrical Communications from Rohtak. Avoid Gotras: Pawria, Ahlawat, Nandal. Cont.: 9811658557*
- *SM4 Jat Girl 27/5'4" Graduation from Kurukshetra University, GNM from Pt. Bhagwat Dayal Sharma University Rohtak. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881*
- *SM4 Jat Girl (DOB 13.10.91) 27/5'5" BA, LLB (Hons.), LLM, Pursuing Ph.D from M.D.U. Rohtak. Advocate in Punjab & Haryana High Court. No dowry seeker. Preferred match from Chandigarh, Panchkula, Mohali. Own flat at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal. Cont.: 9417333298*
- *SM4 Jat Girl 27/5'5" M.Com, MBA, Working in government bank as officer in Panipat. Family settled in Bhiwani. Avoid Gotras: Gawaria, Sangwan, Sunda. Cont.: 9646519210*
- *SM4 Jat Girl (DOB Oct. 86) 32/5'5" MSc (Geography), M.Phil, PhD (pursuing from Punjab University since March, 2015) NET, JRF qualified. Father retired Haryana government officer. Avoid Gotras: Panghal, Dalal, Sangwan. Cont.: 9646404899*
- *SM4 Jat Girl (DOB 08.11.89) 29/5'3", Employed as staff nurse in Government hospital. Father Govt. job. Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Ahlawat. Cont.: 9463881657.*
- *SM4 Jat Girl 26/5'2", B.A. Assistant Manager in Govt. Bank. Avoid Gotras: Mor, Ahlawat, Malik. Cont.: 9668013817*
- *SM4 Jat Boy 25/5'11", B.Sc, B.Ed and Stack pass SCience Teacher in D.A.V. School. Avoid Gotras: Mor, Ahlawat, Malik.*

Cont.: 9668013817

- SM4 Jat Boy (DOB 08.10.90) 28/5'11" B.C.A. Working as Office Assistant in Haryana Gramin Bank. Avoid Gotras: Dahiya, Sehrawat, Chhikara. Cont.: 9417091551
- SM4 Jat Boy 28/6'2" IRS, Employed in Chandigarh Zone. Preferred Professor or from Civil Service. Avoid Gotras: Malik, Rathi, Chhikara. Cont.: 9812183264
- SM4 Manglik Jat Boy (DOB 24.09.90) 28/5'7" B.Tech in Mechanical Engineering from Mulana University, Ambala. Employed as Upper Division Clerk in Chandigarh Administration. Family settled in Chandigarh. Avoid Gotras: Hooda, Kadian, Dalal. Cont.: 7973036732
- SM4 Jat Boy (DOB 06.06.90) 29/5'7". B. Com, M.A. 2nd Year. Employed in Government job in U. T. Secretariat Chandigarh. Avoid Gotras: Dahiya, Malik, Bura. Cont.: 9050016311
- SM4 Jat Boy (DOB 13.01.91) 28/5'9" MBA. Employed as P. O. in Bank of in Baroda. Avoid Gotras: Narwal, Mann, Duhan. Cont.: 9417579758
- SM4 (Dr.) Jat Boy (DOB 02.09.85) 33/5'8" BDS Banglore, Father Retired Principal, Mother MA, BEd. Two sisters BDS/ MBBS. Brother one BDS. Six acre agriculture land. Own Plots, flats and clinic. Required BDS, BAMS, BHMS, Nurse. Avoid Gotras: Deswal, Dahiya, Mor. Cont.: 9868092590
- SM4 Jat Boy (DOB 10.03.90) 29/5'11" BSc in H.M. Employed in railways. Avoid Gotras: Punia, Sangwan, Sheoran. Cont.: 9815304886
- SM4 Jat Boy (DOB 11.11.93) 26/5'8" MSc Physics. Employed as Central Excise Inspector. Preference government employee with height 5'4". Avoid Gotras: Chahal, Dangi, Bagri. Cont.: 9416561365
- SM4 Jat Boy (DOB 07.08.93) 26/5'8" B.V. Sc. Employed in Government job on contract basis at Rohtak. Avoid Gotras: Gehlan, Khatkar, Malik, Boora. Cont.: 9467630182
- SM4 Jat Boy (DOB February, 89) 29/5'11" MBBS. M.O. in Haryana. Father retired from Haryana government. Employed as Auditor in Audit & Accounts Department (C & AG of India) Avoid Gotras: Sangwan, Datarwal, Legha. Cont.: 8058980773
- SM4 Jat Boy (DOB 19.09.86) 32/5'11" Employed as Major in Army. Avoid Gotras: Malik, Ahlawat, Sangwan, Dhaka. Cont.: 9050422041
- SM4 Jat Boy (DOB 3.10.90) 28/6' B.Tech. Employed as Auditor in Audit & Accounts Department (C & AG of India). Avoid Gotras: Dhankhar, Suhag, Sangwan. Cont.: 8219949508
- SM4 Jat Boy (DOB 26.05.92) 26/5'8" B.Tech Mechanical, own factory at Panchkula (PCB Manufacturing). Father Govt. job. Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Ahlawat. Cont.: 9463881657

सूचना

जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकुला के निम्नलिखित आजीवन सदस्यों के पत्र व्यवहार का पूर्ण विवरण सभा के कार्यालय में उपलब्ध नही है। अतः आप सभी से निवेदन है कि इन सदस्यों का दुरभाष/मोबाईल सहित सम्पूर्ण पता जाट सभा चण्डीगढ़ कार्यालय को सूचित करने का कष्ट करें ताकि इनको मासिक पत्रिका जाट लहर तथा सभा की अन्य गतिविधियां नियमित तौर से भेजी जा सकें।

Sr. No	Name	Life Membership No.
01	Sh. Ramphal Narwal, VPO: Kathura/Sonepat	01
02	Sh. Dharmpal Mor, VPO: Madan Heri/Hisar	04
03	Sh. K. S. Balyan, VPO: Malhana/Sonepat	11
04	Sh. Amir Singh Chhikara, Vill: Kheri Asra/Rohtak	30
05	Sh. Ram Dhan Lather, Vill: Budakhera (Lather)/Jind	31
06	Sh. Balwan Singh Dahiya, Vill: Garhi Bala/Sonepat	47
07	Sh. Shankar Lal Thakur , Vill: Dewan/Hisar	50
08	Sh. Jagir Singh Dhanda, Vill: Kandroli/Yamuna Nagar	52
09	Sh. Ram Singh Sehrawat, Vill: Kharar Alipur/Hisar	56
10	Sh. Ram Bhagat Singh Suhag, Vill: Matenhel/Rohtak	57
11	Sh. Jagdev Singh Grewal, Vill: Babroli/Mahendergarh	63
12	Sh. Baljit Singh Phogat, Vill: Rithal/Sonepat	68

Sr. No	Name	Life Membership No.
13	Sh. Inderjit Singh Banger, Vill: Panchi/Sonepat	73
14	Sh. J. C. Kanwar, # 798 Sector 2, Pkl	87
15.	Sh. Shekar Chand Mor, # 798, Sector 2, Pkl	88
16	Hon'ble Justice Ajay Lamba, # 575, Sector 16, Chd.	92
17	Sh. Inder Singh Malik PWD (B &R) Haryana	93
18	Sh. Baljit Singh Narwal, Vill: Nagla Jagir/Yamuna Nagar	96
19	Sh. Kartar Singh Tomar, Vill: Gorar/Sonepat	103
20	Sh. Naib Singh Daria, Vill: Jeoli/Ambala	108
21	Sh. R. D. S. Grewal, 63 Urban Estate Hisar	109
22	Sh. Shamsher Singh Dhanda, Vill: Bhudhana/Hisar	110
23	Sh. Rajender Singh, Vill: Malhana/Sonepat	111
24	Sh. Shri Krishan Malik, Vill: Dabarpur/Sonepat	113

विचारकों को जो चीज आज स्पष्ट दिखती है, दुनिया उस पर अमल करती है। –विनोबा भावे

25	Sh. Chand Ram Dagar, Vill: Bhagru/Sonepat	127
26	Sh. Ramphal Malik, Vill: Bhadhana/Jind	126
27	Sh. Dharmpal Kaliraman, Vill: Dewana/Hisar	135
28	Sh. Virender Singh Malik, Vill: Bhagan/Sonepat	143
29	Sh. Maya Chand Dhun, Vill: Nangal/Bhiwani	147
30	Sh. Rajender Singh Dahiya, Vill: Kawali/Sonepat	162
31	Sh. Dilbagh Singh Kharb, Vill: Bharan/Rohtak	165
32	Sh. Jarnail Singh ADA, Model Town Karnal	174
33	Sh. Nafe Singh, Vill: Lath/Sonepat	170
34	Sh. Raj Singh Malik, Advocate, Vill: Seenkh/Panipat	190
35	Sh. Partap Singh Ghanghas, Vill: Dhanana/Hisar	206
36	Sh. Rajbir Singh Kadyan, Advocate 109, Sector 20 Chd.	209
37	Sh. O. P. Rathee, Vill: Dhanana/Sonepat	218
38	Sh. Inderaj Singh Sawant, Architect Haryana	221
39.	Sh. Daya Nand Gulia, VPO: Badli/Rohtak	222
40	Sh. Prem Singh Narwal, Vill: Kathura/Sonepat	230
41	Sh. Gaje Singh Dagar, Vill: Neola/Rewari	231
42	Sh. Dharmvir Singh Dhanda, 936, Sector 4 Haripur/Pkl	235
43	Sh. Hoshiar Singh Kharb, Vill: Kani Kheri/Hisar	236
44	Sh. Karan Singh Jaglan, 392, Sector 11 Pkl	239
45	Sh. Surender Singh Bhyan, Harco Bank	247
46	Sh. Rishal Singh Sangwan, Harco Bank	254
47	Sh. Devi Dayal Beniwal, Vill: Suli Khera/Hisar	263
48	Sh. Giri Raj Dagar, Vill: Dhatir/Faridabad	273
49	Sh. Tarif Singh, Vill: Girach/Bhiwani	259
50	Sh. Mohinder Singh Punia, Vill: Khor/Gurugram	411
51	Sh. Phool Kanwar, Vill: Hasanpur/Rohtak	310
52	Sh. Subhash Chahal, Vill: Mahmudpur/Sonepat	321
53	Sh. Kartar Singh Faugat , Vill: Khatiwas/Bhiwani	409
54	Sh. Krishan Hooda, Vill: Sanghi/Rohtak	424
55	Sh. Harbhaj, Vill: Chamarkhera/Hisar	427
56	Sh. Satbir Singh Ahlawat, Vill: Dighal/Rohtak	432
57	Sh. Ishwar Singh Kajal, Vill: Ripur Jattan/Karnal	442
58	Sh. Partap Singh Sangwan, Vill: Rally/Pkl	454
59	Sh. Ramdhari Solath, Vill: Durjanpura/Bhiwani	458
60	Sh. Ved Mittar Gill, Vill: Kharenti/Rohtak	455
61	Sh. Desh Raj Lamba, 1232, Sector 11 Pkl	467
62	Sh. Ramphool Sheoran 1156, Urban Estate, Hisar	473
63	Sh. Surajmal ADA , Hisar	508
64	Sh. Jasbir Singh Kharb Jawahar Nagar, Hisar	520
65	Sh. Ram Kumar Rathee, Vill: Dhanana/Sonepat	536
66	Sh. Sant Ram Sehrawat, vill: Khandrai/Sonepat	546
67	Sh. Jai Singh Dhayal, Vill: Redhana/Jind	538
68	Sh. Kashmir Singh Mor, vill: Ramkali/Jind	542
69	Sh. Jagbir Singh Khatri, Vill: Ismaila/Rohtak	558
70	Sh. Rajender Singh Malik, Vill: Mirjapur Kheri/sonepat	560
71	Sh. Narender Singh ADA, Hisar	565
72	Prof. Ranbir Singh Mann, Vill: Rajthal/Hisar	567
73	Sh. Balbir Singh Saroha, Vill: Bayanpur/Sonepat	571
74	Sh. Narender Dahiya, Vill: Thana-kalan/Sonepat	572
75	Sh. Mehar Singh Sehrawat, Vill: Galab/Gurugram	574
76	Sh. Sumer Singh Nagil, Vill: Loharu(Dhamtoda)/Bhiwani	575
77	Sh. Sube Singh Dahiya, Vill: Birdhana/Rohtak	578
78	Sh. Randhir Singh Saroha, Vill: Rathdhana/Sonepat	588
79	Sh. Baljit Singh Malik, Vill: Dhanadhari/Hisar	593
80	Sh. T. R. Kundu, Vill: Kinala/Hisar	595
81	Sh. Satbir Singh Mor, Vill: Sheemla/Jind	601
82	Sh. Rajender Singh Dhariwal, Vill: Mithathal/Bhiwani	605
83	Sh. Dharmvir Singh Koth, Vill: Nagla Mussa/ Gaziabd (U.P)	608
84	Sh. Jagmal Singh Arya, Vill: Loharu/Bhiwani	611
85	Sh. Shanti Sarup Malik, Vill: Bhagan/Sonepat	612
86	Sh. Ved Singh Chahal, Vill: Jouli/Sonepat	613
87	Sh. Krishan Lal, Vill: Dhiranwas/Hisar	614
88	Sh. Ram Kishan Lather, Vill: Deskhera/Jind	631
89	Sh. Ram Chander Gehlayan, Vill: Dehra/Panipat	632
90	Sh. Anil Kumar Rathee , 3918, Sector 22, Chd.	652
91	Sh. Gurpreet Singh Doad, Advocate	653
92	Sh. Raghubir Singh Malik, SDO, Vill: Mahmudpur Sonepat	654
93	Sh. Vijay Dahiya , Vill: Rohna/Rohtak	661
94	Sh. K. S. Dalal, 158, Sector 7, Faridabad	666
95	Sh. M. S. Dalal, 158, Sector 7, Faridabad	668
96	Sh. Randhir Singh Malik, 1635, Sector 15, Pkl	674
97	Sh. Baljit Singh Malik	677
98	Sh. Naresh Malik S/o Sh. Darbari Singh, Vill: Gandhra/Rohtak	686
99	Sh. Ranbir Singh s/so Sh. Karan Singh, Vill: Khanpur/Karnal	694
100	Sh. J. S. Choudhary, Urban Estate-2, Hisar	701
101	Sh. Jagir Singh S/o Sh. Rikha Ram, Vill Kirmach/Kurukshetra	709
102	Sh. Naib Singh, 2059 Sector 15, Jagdhri/Yamuna Nagar	712
103	Sh. Darshan Kumar S/o Sh. Tek Ram, Vill: Nindana/Jind	715
104	Sh. Ved Pal Dhankhar s/so Sh. Hoshiar Singh, Mehrana/Rohtak	718
105	Sh. Randhir Singh Malik, Clerk, Vill: Rabhran/Sonepat	727
106	Sh. Satbir Singh, Vill: Kasandi/Sonepat	741
107	Sh. Kapoor Singh S/o Sh. Shis Ram, Vill: Gangtan/Jhajjar	742
108	Sh. Vijay Kumar Rathee S/o Sh. Ranbir Singh, Vill: Sankhod/Jhajjar	759
109	Sh.Virender Singh Dhull S/o Sh. Gopi Ram, V: Bhagwatipur/Rohtak	762
110	Sh. Prem Singh Chahal S/o Sh. Phool Singh, V: Silani/Rohtak	774
111	Mrs. Kamlesh w/o Late Sh. Mahavir Singh, V: Mehrana/Jind	775
112	Sh. Om Parkash Ahlawat S/o Sh. Maha Singh, V: Dighal/Rohtak	776
113	Sh. D. R. Kairon, HCS	779
114	Sh. Balbir Singh Malik S/o Sh. Dal Singh, V: Gatoli/Jind	780
115	Sh. Narender Singh Malik S/o Sh. Balbir Singh Malik, V: Gatoli/Jind	781

116 Sh. Sumit Kumar S/o Sh. Maha Singh, V: Chhatra Majra/Sonepat 782
117 Sh. Randhir Singh Balhara S/o Sh. Ramdhan, Bahuakbar Pur/Rohtak 783
118 Sh. Ramesh Chander Dangi S/o Sh. Dharam Chand, Rurol/Bhiwani 804
119 Sh. Zile Singh Khatri S/o Sh. Sube Singh, V: Ismaila/Rohtak 822
120 Sh. Narender Singh Dhattarwal, V: Bhaini Maharajpur Rohtak 824
121 Mrs. Deepak Lohan S/o Late G.S.Lohan, V: Bhaini Amirpur/Hisar 841
122 Sh. Anand Parkash, Harco Bank 835
123 Sh. A. K. Choudhary, SDE, # 1644 Urban Estate, Hisar 885
124 Sh. Balwant Singh Dalal, Harco Bank 855
125 Sh. Dharamvir Chopra, Harco Bank 862
126 Sh. Randhir Singh Sihag, Harco Bank 864
127 Sh. R. S. Lamba, Harco Bank 866
128 Sh. Balwan Singh Sangroha, Harco Bank 874
129 Sh. Amarjeet Singh, Harco Banak 878
130 Sh. Surender Singh Atri, Education U.T. 883
131 Sh. Virender Singh Godara, Education Haryana 893
132 Sh. Joginder Singh Kundu, Education Haryana 889
133 Sh. Jai Singh Malik, Education Haryana 891
134 Sh. Satpal Bisla, Education Haryana 895
135 Sh. Anil Kumar Sehrawat, Education Haryana 896
136 Sh. Hoshiar Singh, Education Haryana 897
137 Sh. Krishan Malhan C/o Sh. Mahender Narwal, HMT 916
138 Sh. Wazir Singh Dalal, VPO: Chiri, Distt. Rohtak 918
139 Sh. Naresh Kumar S/o Maha Singh, Gandhra, Rohtak 920
140 Sh. Maha Singh S/o Sh. Bhola Ram, Gandhra, Rohtak 921
141 Sh. Ajay Malik S/o Sh. Raj Pal, Gandhra, Rohtak 933
142 Sh. Wazir Chand, Irrigation, Sirsa 1014
143 Dr. K. V. Singh 1020
144 Sh. R. S. Doon, IAS 1024
145 Sh. R. S. Dahiya, XEN, HSEB Faridabad 1039
146 Sh. Jorawar Singh, Abohar 1045
147 Sh. Yudhvir Singh, HCS 1046
148 Sh. Rohtash Singh Kharb, IAS 1047
149 Sh. B. S. Boora, HCS (Rtd.), U. E. Jind 1049
150 Dr. Karan Singh, Karan Singh Clinic, Sirsa 1050
151 Dr. Ram Kumar Sheokan, Candy Market jind 1052
152 Sh. Mauji Ram Bamel, Lecturer, Meham/Rohtak 1054
153 Sh. Ishwar Singh Rathee, ITI, Meham 1055
154 Sh. Ram Awtar S/o Sri Chand, Civil Line Jhajjar 1081
155 Sh. Krishan Lal sS/o Sh. Budh Ram, VPO: Raiya, Rohtak 1082
156 Sh. Mohinder Singh, 123, Sector 14, Sonepat 1090
157 Sh. Prem Singh S/o Sh. Nathu Ram, Delhi Bye Pass, Karnal 1106
158 Sh. Balbir Singh S/o Sh. Lachhman S. VPO: Chanaut, Hisar 1116
159 Master Ajay Singh, VPO: Chanaut, Hisar 1117
160 Sh. Narender Singh Dahiya S/o Sh. Chandan S. Vill: Kawali,Sonepat 1123
161 Sh. Bhupinder Sssingh Punia, Block Samiti Guhla, Kaithal 1134
162 Sh. Jai Singh S/o Sh. Karan Singh, Anaj Mandi Ladwa/KKRS 1178
163 Sh. Ranjit Singh S/o Sh. Singh Ram, Anaj Mandi Ladwa/KKRS 1180
164 Sh. Yudhvir Singh Malik, IAS 1188
165 Sh. D. P. S. Grewal, Satroad Khurd, Hisar 1192
166 Sh. Mahavir S. Kadyan, VPO: (Majra) Dubaldhan, Rohtak 1193
167 Sh. A. R. Rajesh , DA, Alakhpura/Bhiwani 1201
168 Sh. Bijender Singh Vairwal , Vill: Ghogera/Faridabad 1209
169 Sh. Anar Singh Tehlan, Adv. c/o HUDA Bahadurgarh 1222
170 Sh. Shamsher Singh S/o Sh. Hukam Singh, DC colony, Hisar 1241
171 Sh. Baljit Singh Rathi S/o Sh. Badlu Ram, Lakhan Majra/Rohtak 1245
172 Sh. Virender Singh Ahlawat, Vill Husainpur Muzafar Nagar (U.P) 1250
173 Sh. Ishwar Singh Gehlan S/o Kanhaiya Lal, V: Atta/Panipat 1252
174 Sh. Virender Singh Rathi S/o Balbir Singh, Vill: Kharar/Rohtak 1253
175 Sh. Mohan Lal Kaswan, Vill: Panniwala Mota/Sirsa 1255
176 Sh. Dalip Singh, Vill: Chandrawal/Fatehabad 1256
177 Sh. Luldip Ssissngh Ahlawat, TM, Vill: Kharkara/Rohtak 1258
178 Sh. Ranbir Singh, HBC Gurugram 1267
179 Sh. Krishan Lal Choudhary c/o HSIDC Pkl 1270
180 Sh. Sumit Sheoran S/o Sh. H. S. Sheoran 1278
181 Sh. Jaswant Singh c/o M/s Bharat Seats Ltd. Gurugram 1281
182 Sh. Rajender Singh S/o Late Ch. Priyavart, New Delhi 1293
183 Sh. Surender Singh S/o Late Ch. Priyavart, New Delhi 1294
184 Mrs. Rajbala w/o Sh. Surender Singh, Rajauri Garden Delhi 1296
185 Sh. Yuvraj Singh S/o Sh. Surender Singh, Rajauri Garden, Delhi 1295
186 Mrs. Meena Chhikara w/o Sh. Rajender Singh, Rajori Garden Delhi. 1297
187 Sh. Ram Kishan Joon S/o Sh Ram Gopal, V: Nuna Majra/Rohtak 1435
188 Sh. Anil Kumar Hooda, CA, Vill: Asan/Rohtak 1444
189 Sh. Inder Singh Malik, Vill: Mahmud Pur/Sonepat 1446
190 Sh. Satya Parkash Sangwan S/o Bhagwan Singh, Vill: Khera/Jind 1450
191 Sh. Surender Singh Choudhary, Vill: Suli Khera/Hisar 1460
192 Sh. Manoj Chahal, Advocate 1474
193 Sh. Sat Narain Pilania, Advocate 1475
194 Sh. Jai Parkash Dhull, Advocate 1476
195 Sh. Mahavir Singh Malik, DA 40-B, Hari Nagar, Delhi 1490

196 Sh. Hira Singh Fouji, Vill: Shamlo-kalan/Jind 1515
197 Sh. Kashmir Singh S/o Sh. Munshi Ram, V: Shamlo-kalan/Jind 1517
198 Sh. Chander Singh Dahiya, Vill: Shamlo-kalan/Jind 1529
199 Sh. Om Parkash S/o Sh. Dharm Singh, Vill: Sshamlo-kalan/Jind 1536
200 Sh. Nahna Ram Vill: Shamlo-kalan/Jind 1537
201 Sh Udey Ram S/o Sh. Hans Ram, Vill: Gosain-khera/Jind 1538
202 Sh. Mahavir Singh S/o Sh. Hoshiar Singh, Vill: Shamlo-kalan/Jind 1543
203 Sh. Rajbir Singh S/o Sh. Sube Singh Vill: Shamlo-kalan/Jind 1546
204 Sh. R. S. Lamba, IFS (Rtd.) 1583
205 Sh. Gurnam Singh, Advocate, Jagadhri/Yamuna Nagar 1589
206 Sh. Baru Ram, Vill: Kalanour/Yamuna Nagar 1587
207 Sh. Kulwant Singh Advocate, Jagadhri/Yamuna Nagar 1601
208 Sh. Jagir Singh Deswal, Advocate, Jagadhri/Yamuna Nagar 1602
209 Sh. Sadhu Ram, SDO (Rtd.) Yamuna Nagar 1603
210 Sh. Jora Singh, Advocate, Jagadhri/Yamuna Nagar.. 1604
211 Sh. Guljar Singh, Vill: Lopon/Yamuna Nagar 1614
212 Sh. Ranjan Lohan, Advocate, Chd. . 1626
213 Dr. P. S. Kundu, West Ram Nagar, Sonepat 1633
214 Dr. A. S. Dangi, Veterinary Surgeon, Kalwa/Jind 1639
215 Dr. Jasbir Singh Deswal, Veterinary Surgeon, Jind 1646
216 Dr. Balbir Singh Dhandi, Animal Husbandry Hisar 1647
217 Dr. Dalbir Singh, Veterniry Surgeon, Dhakla/Jhajjara 1664
218 Smt. Gian Devi w/o Late Ram Singh, Vill: Taprion/Ambala 1681
219 Sh. H. S. Mandiwal S/o Sh. Mangtu Ram, Vill: Dhabdhan, Bhiwani 1688
220 Mrs. Rajpati Malik w/o Late H. S. Malik, 481/6 Karnal 1689
221 Sh. Balbir Singh Sihag, Vill: Gajuwala/Fatehabad 1719
222 Smt. Lachhan Rawat W/o O.P. Rawat, Vill: Nangli/Faridabad 1722
223 Sh. Virender Singh Rana, Harco Bank 1728
224 Dr. Vijender Singh, FSL Madhuban/Karnal 1729
225 Sh. Hawa Singh Lohan, Project Director, Agriculture 1732
226 Sh. Balwan Singh Rana, DSP, Gurugram 1733
227 Sh. Ajit Singh Kataria. Gurgain Village, Gurugram 1734
228 Sh. K. S. Tomar, IPS (Rtd.) 1735
229 Sh. S. S. Deswal, IPS 1736
230 Mrs. Swaran Lata Malik w/o Late Rajinder Malik 1743
231 Sh. Kulwinder Singh, DSP, Vill: Tanda Heri/Rohtak 1753
232 Sh. Jai Pal Malik, 842, Sector 2, Pkl 1756
233 Sh. Neeraj Malik S/o Sh. Jai Pal Malik-------do----- 1757
234 Sh. Sukhender Sangwan, 402/30, Dev Colony, Rohtak 1765
235 Sh. Suraj Bhan Hooda, Vill: makroli-kalan/Rohtak 1766
236 Dr. C. P. Malik, Agriculture Haryana 1770
236 Sh. Parveen Dhaka, SDO, Jawahar Nagar, Hisar 1778
237 Sh. Sandeep Malik, 1023, Sector 8, Chd. 1779
238 Sh. Balwan Singh Hooda, Vill: Gangana/Sonepat 1784
239 Sh. Ved Pal Malik, S.I., Sector 26 Police Line Chd. 1790
240 Sh. Vijay Parkash Chief Engg. Park Colony, Bhiwani 1838
241 Sh. Chander Bhan Rangi, Forest, Haryana 1844
242 Mrs. Saroj Devi w/o Sh. Surender Dahiya, Vill Rally/Pkl 1852
243 Col. Raghubir Singh, Member HERC 1855
244 Sh. Jagdish Mann Advocate, Advocate Colony Hansi/Hisar 1869
245 Sh. R. K. Sirohi, Commissioner, Excise & Taxation, Delhi 1870
246 Sh. Bhag Singh Lather, Survey of India, Chd. . 1875
247 Sh. Rajender Singh Dalal S/o Late K R. Dalal, Vill: Chiri/Rohtak 1874
248 Sh. R. P. Lather, 620, Sector 6, Pkl 1904
249 Sh. M. S. Sheokand, Tribune Mittar Vihar, Pkl 1918
250 Dr. K. P. Singh Chd. 1919
251 Sh. Rajender Singh Gehlawat, Electricity U. T. 1928
252 Sh. Kunal Dahiya S/o Late Rajender Dahiya, Birdhana/Jhajjar 1930
253 Dr. Naresh Narwal, HCS 1938
254 Sh. Khub Ram Dudi, Vill: Teja Khera/Sirsa 1940
255 Sh. D. P. Dhankhar, IRS 1946
256 Sh. Ashok Sangwan, IAS 1951
257 Sh. A. S. Dahiya S/o Sh. Ran Singh, Vill: Sehri/Sonepat 1956
258 Sh. Gangsher Singh Deswal Vill: Ganganpur/Ambala 1958
259 Sh. Deepak Dahiya, # 410 Sector 10, Pkl 1961
260 Sh. Vijay Kumar Sindhu, Police Line Sector 26, Chd. 1970
261 Sh. Ashok Rathi S/o Sh. Attar Singh, Vill: Nindana/Rohtak 1974
262 Sh. Suraj Bhan Boora, XEN PWD (B &R) 1975
263 Sh. M. S. Chopra, Former OSD/CM Haryana 1976
264 Sh. Mahavir Singh Kundu S/o Lal Singh, Vill: Shahpur/Panipat 1983
265 Sh. Hari Chand Dahiya, Vill: Bhatgaon/Sonepat 1987
266 Sh. Ram Singh Malik, Haryana Civil Secretariat 1989
267 Mrs. Urmil Beniwal, HAU Hisar 1992
268 Sh. Inder Pal Goyat, Advocate 1993
269 Sh. Jagbir Singh Malik, Advocate 1994
270 Sh. Ajay Ghanghas Advocate 1995
271 Mrs. Sunita w/o Sh. Raj Pal Singh, H.B. Sector 14, Pkl 1997
272 Sh. Vijay Godara, HSIDC Pkl 1999
273 Sh. Vijay Dhama S/o Sh. R R. Dhama, Sector 15 Pkl 2002
274 Sh. Kuldip Singh S/o Sh. Mansa Ram, Vill: Kultanikheri/Panipat 2006
275 Mrs. Suman Malhan W/o P K Malhan, Good Luck Society Gurgaon 2028
276 Mrs. Sunita Sehrawat w/o Sh. Rajbir Sehrawat Adv Society, CHD 2037
277 Sh. Maheshwar Dayal Sheokand S/o Sh R. D. Sheokand 2054
278 Sh. Rajender Singh S/o Sh. Rai Singh, V: Puthimangal Khan/Hisar 2062

धैर्य रखना मुश्किल होता है, लेकिन उसका फल मीठा होता है। – ससो

279 Sh. Rajender Singh Dahiya, CPWD Shillong 2063
280 Sh. Ravinder Sheokand , Tribune Mittar Vihar Pkl 2067
281 Mrs. Mukesh Rani w/o Sh. Shamsher Singh Dhillon HUDA Kaithal 2098
282 Sh. Dharamvir Dhillon Amrawati Emclave, Pkl 2103
283 Dr. Dalip Singh Malik, DLF Colony Gurugram 2113
284 Sh. Vikas Dahiya, Sector 20, Chd. 2114
285 Sh. Naresh Malik S/o Sh. Karan Singh V: Gandhra/Rohtak 2119
286 Dr. Raj Kumar Narwal , D-Block, Amrawati Enclave Pinjore 2136
287 Sh. Bhupinder Singh Malik, Vill: Gamri/Sonepat 2163
288 Sh. Baljit Singh Nehra, 726-A/20, Prem Nagar, Rohtak 2180
289 Sh. Virender Singh Rathi, Shakti Bhawan Sector 6, Pkl 2181
290 Sh. Amit Sheoran 563 Sector 14, Sonepat 2184
300 Sh. Pardeep Punia, Sector 35 Suncity Rohtak 2188
301 Smt. Satya Sehrawat w/o Sh. Subhash Sehrawat, Gohana/Sonepat 2223
302 Sh. Himanshu Malik S/o Sh. Naresh K Malik, Gandhra/Rohtak 2254
303 Mrs. Rajnish Malik w/o Sh. Naresh K Malik, Gandhra/Rohtak 2255
304 Sh. Virender Singh # 274, Sector 7-A, Faridabad 2256
305 Sh. Hemant Kumar Kadian, # 274, Sector 7-A, Faridabad 2259
306 Sh. Vishal Nehra, 727-A/20, Prem Nagar, Rohtak 2270
307 Mrs. Prem Devi w/o Late Dalip Singh Nehra, Biana Pana/Bhiwani 630
308 Sh. Satbir Singh Nain, Harco Bank 857
309 Sh. ram Phal Dagar, Vill: Chhapar/Rohtak 120
310 Sh. Bhim Singh Lakra, Vill: Kanwarpura/Sirsa 134
311 Sh. Randhir Singh Kundu, Advocate 373
312 Sh. Shish Pal Lalar, Advocate 1158
313 Sh. Rajinder Singh Kadian S/o Sh. Khem Chand, Irrigation Haryana 1662
314 Sh. Sukhbir Singh Lather S/o Sh. Desh Raj, Julana/Jind 973
315 Sh. Surender Singh, GM near Suri Petrol Pump Sonepat 1226
316 Sh. Sukhbir Singh Dalal, Vandana Hotel New Delhi 1260
317 Sh. Kuldip Singh Ahlawat, TM, Vill: Kharkara/Rohtak 1258
318 Sh. Randhir Singh Sehrawat S/o Sh. Ram Sarup, V: Karhans/Panipat 1405
319 Sh. Ranvir Singh Tewetia, Vill: Kundal/Faridabad 472
320 Sh. Manjit Singh Dalal S/o Sh. Bhim Singh, Vill: Chiri/Rohtak 1280
321 Sh. Surajbhan Bhakar, M.H.C. Manimajra, U.T 444
322 Sh. Baru Mal Sheoran, Vill: Kheri Jalab/Hisar 234
323 Sh. Hardev Singh, Vill: Bichpari (Uttra Khand) 1462
324 Sh. Ram Mehar Mor, Veterinary Surgeon, Baroda/Sonepat 1643
325 Sh. Hawa Singh, Rail Vihar, MDC Sector 4, Pkl 1231
326 Sh. Surender Singh Ahlawat, Vill: Bhaini Muzaffar Nagar (U.P) 505
327 Sh. Ishwar Singh Ahlawat, HMT, V: Seria/Rohtak, 397
328 Sh. Lachhman Singh Beniwal, HMT, V: Chandana/Kaithal 346
329 Sh. Mehar Singh Chahal, HMT, V: Chhalondi/Kurukshetra 1377
330 Sh. Bir Singh Dagar, HMT, V: Ashwata/Faridabad 1301
331 Mrs. Nirmala Dalal w/o Late Krishan Dalal, V: Jakhoda/Rohtak 367
332 Sh. Hem Chander Dahiya S/o Sh. Mir Singh, HMT Pinjore 1338
333 Sh. Satyavan Dahiya, HMT, V: Silana/Sonepat 347
334 Sh. Ved Mittar Dahiya, HMT V: Bhadhana/Sonepat 392
335 Sh. Surahbhan Dahiya, HMT, V: Badhana/Sonepat 337
338 Sh. Randhir Singh Phogat, HMT, V: Sanspur/Bhiwani 355
339 Sh. Mahavir Sssingh Gehlayan, HMT V: Pawti/Panipat 1336
340 Sh. Tej Pal Phogat HMT, V: Dubaldhan Majra/Jhajjar 1360
341 Sh. Ram Mehar Singh Duhan, HMT V: Karela/Jind 330
342 Sh. Krishan Lal Gill HMT, V: Kharenti/Rohtak 501
343 Sh. Umed Singh Kataria HMT, V: Shah Pur Turak/Sonepat 490
344 Sh Jagbir Singh Kuhar, HMT V: Ratangarh/Sonepat 403
345 Sh. Shilendar Kuntal HMT V: Dudoula/Faridabad 770
346 Sh. Ved Parkash Kadian HMT V: Chimni/Jhajjar 345
347 Sh. Wazir Singh Jaglan, HMT V: Noultha/Panipat 1354
348 Sh. Mohinder Singh Kaliraman HMT, V: Bhatri/Hisar 1380
349 Sh. Raghubir Singh Kharb HMT, V: Rajau Khurd/Jind 1326
350 Sh. Narender Suhag HMT, V: Bishan/Rohtak 1364
351 Sh. Satpal Jhajjadia, HMT V: Mahjat/Hisar 1365
352 Sh. Satyavan Singh Kodian HMT V: Hasan Pur/Rohtak 1359
353 Sh. Surender Singh Khatri HMT V: 1230/34, Jagdish Colony/Rohtak 1353
354 Sh. Chand Ram Lakra, HMT V: Rattan Garh Majra/Sonepat 401
355 Sh. Mahabir Singh Malik HMT V: Pugthala/Sonepat 512
356 Sh. Ajit Singh Lohchab, HMT V: Bupania/Rohtak 480
357 Sh. Mahabir Singh Malik HMT, V: Gamri/Sonepat 360
358 Sh. Ranbir Singh Malik HMT V: Bhatana Jafrabad/Sonepat 1325
359 Sh. Ramesh Chander Mandhan HMT V: Garhi Birbal/Karnal 1714
360 Sh. Mehar Singh Narwal, HMT V: Rithal/Sonepat 378
361 Sh. Mohinder Singh Narwal HMT V: Rithal/Sonepat 1373
362 Sh. Arjun Singh Rajain HMT V: Dhar/Jhajjar 379
363 Sh. Mehar Singh Rana HMT V: Hullaheri/Sonepat 341
364 Sh. Phool Kanwar Sheoran HMT V: Bhalot/Rohtak 1334
365 Sh. Bachu Ssingh Tanwar HMT V: Chhapera/Gurugram 504
366 Smt. Sheela Devi w/o Late Jitender Singh HMT V: Chhara/Jhajjar 1361

हम आजाद तभी पाते हैं, जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। –रवीन्द्रनाथ टैगोर

डा0 एम एस मलिक, (आईपीएस सेवा निवृत)
भूतपूर्व पुलिस महा निदेशक, हरियाणा

चेयरमैन
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, जम्मू
अध्यक्ष, जाट सभा, चंडीगढ़
दूरभाष : 0172-2641127, 2654932
Email : jat_sabha@yahoo.com

आर्थिक अनुदान की अपील

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा 6 जून 2019 को गांव कोटली बाजालान-नोमैई कटरा जम्मु में जी टी रोड़ पर 10 कनाल भूमि की भू-स्वामी श्री संतोष कुमार पुत्र श्री बदरी नाथ निवासी गांव कोटली बाजालान, कटरा, जिला रियासी (जम्मु) के साथ लंबी अवधि के लिए लीज डीड पंजीकृत की गई है। इस भूमि का इंतकाल भी 6 जुलाई 2019 को जाट सभा चंडीगढ़ के नाम दर्ज हो गया है। इस प्रकार इस भूमि पर जाट सभी चंडीगढ़ का पूर्ण स्वामीत्व स्थापित हो चुका है, जिस पर शीघ्र ही 5 मंजिले यात्री निवास भवन का निर्माण शुरू किया जाएगा।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम की विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फरवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीन बंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राज्यपाल, जम्मु काश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक द्वारा तत्कालीन केंद्रीय मंत्री चौधरी बीरेंद्र सिंह, केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डा0 जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महा निदेशक डा0 एम एस मलिक,भा0पु0से0 (सेवा निवृत) की उपस्थिति में संपन्न किया गया।

यात्री निवास भवन एक लाख बीस हजार वर्ग फुट में बनाया जाएगा जिसमें फैमिली सुईट सहित 300 कमरे होगें। भवन परिसर में एक मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रैंस हाल, डिस्पैंसरी, मैडीकल स्टोर, लाईब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगीं। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफत ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के श्रद्धालुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगीं।

आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार अनुदान देने की कृपा करें। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतू 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा और उसे भवन में आजीवन मुफ्त ठहरने की सुविधा प्रदान की जाएगी। जम्मु काश्मीर के भाई-बहन व दानवीर सज्जन इस संबंध में चौधरी छोटु राम सेवा सदन के अध्यक्ष श्री सर्बजीत सिंह जोहल (मो0नं0 9419181946), श्री भगवान सिंह उप प्रधान (मो0नं0 8082151151) व केयर टेकर श्री मनोज कुमार (मो0नं0 9086618135) पर संपर्क कर सकते हैं। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम जाट सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2-बी, सैक्टर 27-ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर टी जी एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड- एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है।

अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80-जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल
सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़
जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020
RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज, चंडीगढ़, फोन : 0172-2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।